

## कुजात

जुनूबी कनान पर मुकम्मल काबू नहीं पाया जाता

1 यशुअ की मौत के बाद इसराईलियों ने रब से पूछा, “कौन-सा कबीला पहले निकलकर कनानियों पर हमला करे?” 2 रब ने जवाब दिया, “यहदाह का कबीला शुरू करे। मैंने मुल्क को उनके कब्जे में कर दिया है।”

3 तब यहदाह के कबीले ने अपने भाइयों शमौन के कबीले से कहा, “आएँ, हमारे साथ निकलें ताकि हम मिलकर कनानियों को उस इलाके से निकाल दें जो कुरा ने यहदाह के कबीले के लिए मुकर्रर किया है। इसके बदले हम बाद में आपकी मदद करेंगे जब आप अपने इलाके पर कब्जा करने के लिए निकलेंगे।” चुनौचे शमौन के मर्द यहदाह के साथ निकले। 4 जब यहदाह ने दुश्मन पर हमला किया तो रब ने कनानियों और फ़रिज़्जियों को उसके काबू में कर दिया। बज़क के पास उन्होंने उन्हें शिकस्त दी, गो उनके कुल 10,000 आदमी थे।

5 वहाँ उनका मुकाबला एक बादशाह से हुआ जिसका नाम अदूनी-बज़क था। जब उसने देखा कि कनानी और फ़रिज़्जी हार गए हैं 6 तो वह फ़रार हुआ। लेकिन इसराईलियों ने उसका ताक़्क़ुब करके उसे पकड़ लिया और उसके हाथों और पैरों के अंगूठों को काट लिया। 7 तब अदूनी-बज़क ने कहा, “मैंने खुद सत्तर बादशाहों के हाथों और पैरों के अंगूठों को कटवाया, और उन्हें मेरी मेज़ के नीचे गिरे हुए खाने के रद्दी टुकड़े जमा करने पड़े। अब अल्लाह मुझे इसका बदला दे रहा है।” उसे यरूशलम लाया गया जहाँ वह मर गया।

8 यहदाह के मर्दों ने यरूशलम पर भी हमला किया। उस पर फ़तह पाकर उन्होंने उसके बाशिंदों को तलवार से मार डाला और शहर को जला दिया। 9 इसके बाद वह आगे बढ़कर उन कनानियों से लड़ने लगे जो पहाड़ी इलाके, दशते-नजब और मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में रहते थे। 10 उन्होंने हब्रून शहर पर हमला किया जो पहले किरियत-अरबा कहलाता था। वहाँ उन्होंने सीसी, अख़ीमान और तलमी की फ़ौजों को शिकस्त दी। 11 फिर वह आगे दबीर के बाशिंदों से लड़ने चले गए। दबीर का पुराना नाम किरियत-सिफ़र था।

12 कालिब ने कहा, “जो किरियत-सिफर पर फ़तह पाकर क़ब्ज़ा करेगा उसके साथ मैं अपनी बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।” 13 कालिब के छोटे भाई गुतनियेल बिन क्रनज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया। चुनौचे कालिब ने उसके साथ अपनी बेटी अकसा की शादी कर दी। 14 जब अकसा गुतनियेल के हाँ जा रही थी तो उसने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत पाने की दरखास्त करे। अचानक वह गधे से उतर गई। कालिब ने पूछा, “क्या बात है?” 15 अकसा ने जवाब दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आपने मुझे दशते-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे चश्मे भी दे दीजिए।” चुनौचे कालिब ने उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले चश्मे भी दे दिए।

16 जब यहदाह का क़बीला खज़ूरों के शहर से रवाना हुआ था तो कीनी भी उनके साथ यहदाह के रेगिस्तान में आए थे। (कीनी मूसा के सुसर यितरो की औलाद थे)। वहाँ वह दशते-नजब में अराद शहर के करीब दूसरे लोगों के दरमियान ही आबाद हुए।

17 यहदाह का क़बीला अपने भाइयों शमौन के क़बीले के साथ आगे बढ़ा। उन्होंने कनानी शहर सफ़त पर हमला किया और उसे अल्लाह के लिए मखसूस करके मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया। इसलिए उसका नाम हुरमा यानी अल्लाह के लिए तबाही पड़ा। 18 फिर यहदाह के फ़ौजियों ने गज़्ज़ा, अस्कलून और अकरून के शहरों पर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत फ़तह पाई। 19 रब उनके साथ था, इसलिए वह पहाड़ी इलाके पर क़ब्ज़ा कर सके। लेकिन वह समुंदर के साथ के मैदानी इलाके में आबाद लोगों को निकाल न सके। वज़ह यह थी कि इन लोगों के पास लोहे के रथ थे। 20 मूसा के वादे के मुताबिक कालिब को हबरून शहर मिल गया। उसने उसमें से अनाक के तीन बेटों को उनके घरानों समेत निकाल दिया।

21 लेकिन बिनयमीन का क़बीला यरूशलम के रहनेवाले यबूसियों को निकाल न सका। आज तक यबूसी वहाँ बिनयमीनियों के साथ आबाद हैं।

शिमाली कनान पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

22-23 इफ़राईम और मनस्सी के क़बीले बैतेल पर क़ब्ज़ा करने के लिए निकले (बैतेल का पुराना नाम लूज़ था)। जब उन्होंने अपने जासूसों को शहर की तफ़तीश करने के लिए भेजा तो रब उनके साथ था। 24 उनके जासूसों की मुलाकात एक आदमी से हुई जो शहर से निकल रहा था। उन्होंने उससे कहा, “हमें शहर में

दाखिल होने का रास्ता दिखाएँ तो हम आप पर रहम करेंगे।” 25 उसने उन्हें अंदर जाने का रास्ता दिखाया, और उन्होंने उसमें घुसकर तमाम बाशिंदों को तलवार से मार डाला सिवाए मज़क़रा आदमी और उसके खानदान के। 26 बाद में वह हिलियों के मुल्क में गया जहाँ उसने एक शहर तामीर करके उसका नाम लूज़ रखा। यह नाम आज तक रायज है।

27 लेकिन मनस्सी ने हर शहर के बाशिंदे न निकाले। बैत-शान, तानक, दोर, इबलियाम, मजिदो और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ रह गईं। कनानी पूरे अज़म के साथ उनमें टिके रहे। 28 बाद में जब इसराईल की ताक़त बढ़ गई तो इन कनानियों को बेगार में काम करना पड़ा। लेकिन इसराईलियों ने उस वक़्त भी उन्हें मुल्क से न निकाला।

29 इसी तरह इफ़राईम के क़बीले ने भी जज़र के बाशिंदों को न निकाला, और यह कनानी उनके दरमियान आबाद रहे।

30 ज़बूलून के क़बीले ने भी कितरोन और नहलाल के बाशिंदों को न निकाला बल्कि यह उनके दरमियान आबाद रहे, अलबत्ता उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

31 आशर के क़बीले ने न अक्को के बाशिंदों को निकाला, न सैदा, अहलाब, अकज़ीब, हिलबा, अफ़ीक़ या रहोब के बाशिंदों को। 32 इस वजह से आशर के लोग कनानी बाशिंदों के दरमियान रहने लगे।

33 नफ़ताली के क़बीले ने बैत-शम्स और बैत-अनात के बाशिंदों को न निकाला बल्कि वह भी कनानियों के दरमियान रहने लगे। लेकिन बैत-शम्स और बैत-अनात के बाशिंदों को बेगार में काम करना पड़ा।

34 दान के क़बीले ने मैदानी इलाके पर क़ब्ज़ा करने की कोशिश तो की, लेकिन अमोरियों ने उन्हें आने न दिया बल्कि पहाड़ी इलाके तक महदूद रखा। 35 अमोरी पूरे अज़म के साथ हरिस पहाड़, ऐयालोन और सालबीम में टिके रहे। लेकिन जब इफ़राईम और मनस्सी की ताक़त बढ़ गई तो अमोरियों को बेगार में काम करना पड़ा।

36 अमोरियों की सरहद दर्राए-अक़ब्बीम से लेकर सिला से परे तक थी।

## 2

रब का फ़रिश्ता इसराईल को मलामत करता है

1 रब का फ़रिश्ता जिलजाल से चढ़कर बोकीम पहुँचा। वहाँ उसने इसराईलियों से कहा, “मैं तुम्हें मिसर से निकालकर उस मुल्क में लाया जिसका वादा मैंने क़सम

खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था। उस वक्त मैंने कहा कि मैं तुम्हारे साथ अपना अहद कभी नहीं तोड़ूँगा।<sup>2</sup> और मैंने हुक्म दिया, 'इस मुल्क की कौमों के साथ अहद मत बाँधना बल्कि उनकी कुरबानगाहों को गिरा देना।' लेकिन तुमने मेरी न सुनी। यह तुमने क्या किया? <sup>3</sup> इसलिए अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से नहीं निकालूँगा। वह तुम्हारे पहलुओं में काँट बनेंगे, और उनके देवता तुम्हारे लिए फंदा बने रहेंगे।”

<sup>4</sup> रब के फरिश्ते की यह बात सुनकर इसराईली खूब रोए। <sup>5</sup> यही वजह है कि उस जगह का नाम बोकीम यानी रोनेवाले पड़ गया। फिर उन्होंने वहाँ रब के हुज़ूर कुरबानियाँ पेश कीं।

### इसराईल बेवफ़ा हो जाता है

<sup>6</sup> यशुअ के कौम को रखसत करने के बाद हर एक कबीला अपने इलाके पर कब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ था। <sup>7</sup> जब तक यशुअ और वह बुजुर्ग जिंदा रहे जिन्होंने वह अज़ीम काम देखे हुए थे जो रब ने इसराईलियों के लिए किए थे उस वक्त तक इसराईली रब की वफ़ादारी से खिदमत करते रहे। <sup>8</sup> फिर रब का खादिम यशुअ बिन नून इंतकाल कर गया। उस की उम्र 110 साल थी। <sup>9</sup> उसे तिमत-हरिस में उस की अपनी मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया। (यह शहर इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में जास पहाड़ के शिमाल में है।)

<sup>10</sup> जब हमअसर इसराईली सब मरकर अपने बापदादा से जा मिले तो नई नसल उभर आई जो न तो रब को जानती, न उन कामों से वाकिफ़ थी जो रब ने इसराईल के लिए किए थे। <sup>11</sup> उस वक्त वह ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। उन्होंने बाल देवता के बुतों की पूजा करके <sup>12</sup> रब अपने बापदादा के खुदा को तर्क कर दिया जो उन्हें मिसर से निकाल लाया था। वह गिर्दों-नवाह की कौमों के दीगर माबूदों के पीछे लग गए और उनकी पूजा भी करने लगे। इससे रब का गज़ब उन पर भड़का, <sup>13</sup> क्योंकि उन्होंने उस की खिदमत छोड़कर बाल देवता और अस्तारात देवी की पूजा की। <sup>14</sup> रब यह देखकर इसराईलियों से नाराज़ हुआ और उन्हें डाकुओं के हवाले कर दिया जिन्होंने उनका माल लूटा। उसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हाथ बेच डाला, और वह उनका मुकाबला करने के काबिल न रहे। <sup>15</sup> जब भी इसराईली लड़ने के लिए निकले तो रब का हाथ उनके खिलाफ़ था। नतीजतन वह हारते गए जिस तरह उसने कसम खाकर फ़रमाया था।

जब वह इस तरह बड़ी मुसीबत में थे 16 तो रब उनके दरमियान काज़ी बरपा करता जो उन्हें लूटनेवालों के हाथ से बचाते। 17 लेकिन वह उनकी न सुनते बल्कि जिना करके दीगर माबूदों के पीछे लगे और उनकी पूजा करते रहते। गो उनके बापदादा रब के अहकाम के ताबे रहे थे, लेकिन वह खुद बड़ी जल्दी से उस राह से हट जाते जिस पर उनके बापदादा चले थे। 18 लेकिन जब भी वह दुश्मन के ज़ुल्म और दबाव तले कराहने लगते तो रब को उन पर तरस आ जाता, और वह किसी काज़ी को बरपा करता और उस की मदद करके उन्हें बचाता।

जितने अरसे तक काज़ी जिंदा रहता उतनी देर तक इसराईली दुश्मनों के हाथ से महफूज़ रहते। 19 लेकिन उसके मरने पर वह दुबारा अपनी पुरानी राहों पर चलने लगते, बल्कि जब वह मुडकर दीगर माबूदों की पैरवी और पूजा करने लगते तो उनकी रविश बापदादा की रविश से भी बुरी होती। वह अपनी शरीर हरकतों और हटधर्म राहों से बाज़ आने के लिए तैयार ही न होते। 20 इसलिए अल्लाह को इसराईल पर बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा, “इस क्रौम ने वह अहद तोड़ दिया है जो मैंने इसके बापदादा से बाँधा था। यह मेरी नहीं सुनती, 21 इसलिए मैं उन क्रौमों को नहीं निकालूँगा जो यशुअ की मौत से लेकर आज तक मुल्क में रह गई हैं। यह क्रौमैं इसमें आबाद रहेंगी, 22 और मैं उनसे इसराईलियों को आजमाकर देखूँगा कि आया वह अपने बापदादा की तरह रब की राह पर चलेंगे या नहीं।”

23 चुनौचे रब ने इन क्रौमों को न यशुअ के हवाले किया, न फ़ौरन निकाला बल्कि उन्हें मुल्क में ही रहने दिया।

### 3

अल्लाह इसराईल को कनानी क्रौमों से आजमाता है

1 रब ने कई एक क्रौमों को मुल्के-कनान में रहने दिया ताकि उन तमाम इसराईलियों को आजमाए जो खुद कनान की जंगों में शरीक नहीं हुए थे। 2 नीज़, वह नई नसल को जंग करना सिखाना चाहता था, क्योंकि वह जंग करने से नावाक़िफ़ थी। ज़ैल की क्रौमैं कनान में रह गई थीं : 3 फ़िलिस्ती उनके पाँच हुक्मरानों समेत, तमाम कनानी, सैदानी और लुबनान के पहाड़ी इलाके में रहनेवाले हिब्वी जो बाल-हरमून पहाड़ से लेकर लबो-हमात तक आबाद थे। 4 उनसे रब इसराईलियों को आजमाना चाहता था। वह देखना चाहता था कि क्या यह मेरे उन

अहकाम पर अमल करते हैं या नहीं जो मैंने मूसा की मारिफत उनके बापदादा को दिए थे।

### गुतनियेल काज़ी

5 चुनाँचे इसराईली कनानियों, हितियों, अमोरियों, फ़रिज़्जियों, हिब्वियों और यबूसियों के दरमियान ही आबाद हो गए। 6 न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन कौमों से अपने बेटे-बेटियों का रिश्ता बाँधकर उनके देवताओं की पूजा भी करने लगे। 7 इसराईलियों ने ऐसी हरकतें कीं जो रब की नज़र में बुरी थीं। रब को भूलकर उन्होंने बाल देवता और यसीरत देवी की खिदमत की।

8 तब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें मसोपुतामिया के बादशाह कूशन-रिसअतैम के हवाले कर दिया। इसराईली आठ साल तक कूशन के गुलाम रहे। 9 लेकिन जब उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा तो उसने उनके लिए एक नजातदहिंदा बरपा किया। कालिब के छोटे भाई गुतनियेल बिन कनज़ ने उन्हें दुश्मन के हाथ से बचाया। 10 उस वक़्त गुतनियेल पर रब का रूह नाज़िल हुआ, और वह इसराईल का काज़ी बन गया। जब वह जंग करने के लिए निकला तो रब ने मसोपुतामिया के बादशाह कूशन-रिसअतैम को उसके हवाले कर दिया, और वह उस पर गालिब आ गया।

11 तब मुल्क में चालीस साल तक अमनो-अमान कायम रहा। लेकिन जब गुतनियेल बिन कनज़ फ़ौत हुआ 12 तो इसराईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो रब की नज़र में बुरा था। इसलिए उसने मोआब के बादशाह इजलून को इसराईल पर गालिब आने दिया। 13 इजलून ने अम्मोनियों और अमालीकियों के साथ मिलकर इसराईलियों से जंग की और उन्हें शिकस्त दी। उसने खज़ूरों के शहर पर कब्ज़ा किया, 14 और इसराईल 18 साल तक उस की गुलामी में रहा।

### अहद काज़ी की चालाकी

15 इसराईलियों ने दुबारा मदद के लिए रब को पुकारा, और दुबारा उसने उन्हें नजातदहिंदा अता किया यानी बिनयमीन के कबीले का अहद बिन जीरा जो बाँए हाथ से काम करने का आदी था। इसी शख्स को इसराईलियों ने इजलून बादशाह के पास भेज दिया ताकि वह उसे ख़राज के पैसे अदा करे। 16 अहद ने अपने लिए एक दोधारी तलवार बना ली जो तकरीबन डेढ़ फुट लंबी थी। जाते वक़्त उसने उसे अपनी कमर के दाईं तरफ़ बाँधकर अपने लिबास में छुपा लिया। 17 जब वह

इजलून के दरबार में पहुँच गया तो उसने मोआब के बादशाह को खराज पेश किया। इजलून बहुत मोटा आदमी था। 18 फिर अहद ने उन आदमियों को सखसत कर दिया जिन्होंने उसके साथ खराज उठाकर उसे दरबार तक पहुँचाया था। 19-20 अहद भी वहाँ से रवाना हुआ, लेकिन जिलजाल के बुतों के करीब वह मुड़कर इजलून के पास वापस गया।

इजलून बालाखाने में बैठा था जो ज़्यादा ठंडा था और उसके जाती इस्तेमाल के लिए मखसूस था। अहद ने अंदर जाकर बादशाह से कहा, “मेरी आपके लिए खुफिया खबर है।” बादशाह ने कहा, “खामोश!” बाक़ी तमाम हाज़िरीन कमरे से चले गए तो अहद ने कहा, “जो खबर मेरे पास आपके लिए है वह अल्लाह की तरफ़ से है!” यह सुनकर इजलून खड़ा होने लगा, 21 लेकिन अहद ने उसी लमहे अपने बाएँ हाथ से कमरे के दाईं तरफ़ बँधी हुई तलवार को पकड़कर उसे मियान से निकाला और इजलून के पेट में धँसा दिया। 22 तलवार इतनी धँस गई कि उसका दस्ता भी चरबी में गायब हो गया और उस की नोक टाँगों में से निकली। तलवार को उसमें छोड़कर 23 अहद ने कमरे के दरवाज़ों को बंद करके कुंडी लगाई और साथवाले कमरे में से निकलकर चला गया।

24 थोड़ी देर के बाद बादशाह के नौकरों ने आकर देखा कि दरवाज़ों पर कुंडी लगी है। उन्होंने एक दूसरे से कहा, “वह हाजत रफ़ा कर रहे होंगे,” 25 इसलिए कुछ देर के लिए ठहरे। लेकिन दरवाज़ा न खुला। इंतज़ार करते करते वह थक गए, लेकिन बेसूद, बादशाह ने दरवाज़ा न खोला। आखिरकार उन्होंने चाबी ढूँडकर दरवाज़ों को खोल दिया और देखा कि मालिक की लाश फ़र्श पर पड़ी हुई है।

26 नौकरों के झिजकने की वजह से अहद बच निकला और जिलजाल के बुतों से गुज़रकर सईरा पहुँच गया जहाँ वह महफूज़ था। 27 वहाँ इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में उसने नरसिंगा फूँक दिया ताकि इसराईली लडने के लिए जमा हो जाएँ। वह इकट्ठे हुए और उस की राहनुमाई में वादीए-यरदन में उतर गए। 28 अहद बोला, “मेरे पीछे हो लें, क्योंकि अल्लाह ने आपके दुश्मन मोआब को आपके हवाले कर दिया है।” चुनाँचे वह उसके पीछे पीछे वादी में उतर गए। पहले उन्होंने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मक़ामों पर कब्ज़ा करके किसी को दरिया पार करने न दिया। 29 उस वक़्त उन्होंने मोआब के 10,000 ताक़तवर और जंग करने के काबिल आदमियों को मार डाला। एक भी न बचा।

30 उस दिन इसराईल ने मोआब को जेर कर दिया, और 80 साल तक मुल्क में अमनो-अमान कायम रहा।

### शमजर काज़ी

31 अहद के दौर के बाद इसराईल का एक और नजातदहिदा उभर आया, शमजर बिन अनात। उसने बैल के आँकूस से 600 फिलिस्तियों को मार डाला।

## 4

### दबोरा नबिया और लशकर का सरदार बरक

1 जब अहद फ़ौत हुआ तो इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब के नज़दीक बुरी थीं। 2-3 इसलिए रब ने उन्हें कनान के बादशाह याबीन के हवाले कर दिया। याबीन का दास्ल-हुकूमत हसूर था, और उसके पास 900 लोहे के रथ थे। उसके लशकर का सरदार सीसरा था जो हस्सत-हगोयम में रहता था। याबीन ने 20 साल इसराईलियों पर बहुत ज़ुल्म किया, इसलिए उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा।

4 उन दिनों में दबोरा नबिया इसराईल की काज़ी थी। उसका शौहर लफ़ीदोत था, 5 और वह 'दबोरा के खज़ूर' के पास रहती थी जो इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में रामा और बैतेल के दरमियान था। इस दरख़्त के साये में वह इसराईलियों के मामलात के फैसले किया करती थी। 6 एक दिन दबोरा ने बरक बिन अबीनुअम को बुलाया। बरक नफ़ताली के कबायली इलाके के शहर कादिस में रहता था। दबोरा ने बरक से कहा, "रब इसराईल का ख़ुदा आपको हुक्म देता है, 'नफ़ताली और ज़बूलून के कबीलों में से 10,000 मर्दों को जमा करके उनके साथ तबूर पहाड़ पर चढ़ जा! 7 मैं याबीन के लशकर के सरदार सीसरा को उसके रथों और फ़ौज समेत तेरे करीब की कैसोन नदी के पास खींच लाऊंगा। वहाँ मैं उसे तेरे हाथ में कर दूँगा।'"

8 बरक ने जवाब दिया, "मैं सिर्फ़ इस सूत में जाऊँगा कि आप भी साथ जाएँ। आपके बग़ैर मैं नहीं जाऊँगा।" 9 दबोरा ने कहा, "ठीक है, मैं ज़रूर आपके साथ जाऊँगी। लेकिन इस सूत में आपको सीसरा पर ग़ालिब आने की इज़ज़त हासिल नहीं होगी बल्कि एक औरत को। क्योंकि रब सीसरा को एक औरत के हवाले कर देगा।"



चुनाँचे दबोरा बरक के साथ कादिस गई। 10 वहाँ बरक ने ज़बूलून और नफ़ताली के क़बीलों को अपने पास बुला लिया। 10,000 आदमी उस की राहनुमाई में तबूर पहाड़ पर चले गए। दबोरा भी साथ गई।

11 उन दिनों में एक क़ीनी बनाम हिबर ने अपना ख़ैमा कादिस के क़रीब ऐलोन-ज़ाननीम में लगाया हुआ था। क़ीनी मूसा के साले होबाब की औलाद में से था। लेकिन हिबर दूसरे क़ीनियों से अलग रहता था।

12 अब सीसरा को इतला दी गई कि बरक बिन अबीनुअम फ़ौज लेकर पहाड़ तबूर पर चढ़ गया है। 13 यह सुनकर वह हरूसत-हगोयम से रवाना होकर अपने 900 रथों और बाकी लशकर के साथ क़ैसोन नदी पर पहुँच गया।

14 तब दबोरा ने बरक से बात की, “हमला के लिए तैयार हो जाँ, क्योंकि रब ने आज ही सीसरा को आपके काबू में कर दिया है। रब आपके आगे आगे चल रहा है।” चुनाँचे बरक अपने 10,000 आदमियों के साथ तबूर पहाड़ से उतर आया। 15 जब उन्होंने दुश्मन पर हमला किया तो रब ने कनानियों के पूरे लशकर में रथों समेत अफ़रा-तफ़री पैदा कर दी। सीसरा अपने रथ से उतरकर पैदल ही फ़रार हो गया।

16 बरक के आदमियों ने भागनेवाले फ़ौजियों और उनके रथों का ताक़ुक़ुब करके उनको हरूसत-हगोयम तक मारते गए। एक भी न बचा।

### सीसरा का अंजाम

17 इतने में सीसरा पैदल चलकर क़ीनी आदमी हिबर की बीवी याएल के ख़ैमे के पास भाग आया था। वजह यह थी कि हसूर के बादशाह याबीन के हिबर के घराने के साथ अच्छे ताल्लुकात थे। 18 याएल ख़ैमे से निकलकर सीसरा से मिलने गई। उसने कहा, “आएँ मेरे आक्रा, अंदर आएँ और न डरें।” चुनाँचे वह अंदर आकर लेट गया, और याएल ने उस पर कम्बल डाल दिया।

19 सीसरा ने कहा, “मुझे प्यास लगी है, कुछ पानी पिला दो।” याएल ने दूध का मशकीज़ा खोलकर उसे पिला दिया और उसे दुबारा छुपा दिया। 20 सीसरा ने दरखास्त की, “दरवाज़े में खड़ी हो जाओ! अगर कोई आए और पूछे कि क्या ख़ैमे में कोई है तो बोलो कि नहीं, कोई नहीं है।”

21 यह कहकर सीसरा गहरी नींद सो गया, क्योंकि वह निहायत थका हुआ था। तब याएल ने मेख और हथोड़ा पकड़ लिया और दबे पाँव सीसरा के पास

जाकर मेख को इनने जोर से उस की कनपटी में ठोक दिया कि मेख ज़मीन में धँस गई और वह मर गया।

22 कुछ देर के बाद बरक सीसरा के ताक्कुब में वहाँ से गुज़रा। याएल खैमे से निकलकर उससे मिलने आई और बोली, “आएँ, मैं आपको वह आदमी दिखाती हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं।” बरक उसके साथ खैमे में दाखिल हुआ तो क्या देखा कि सीसरा की लाश ज़मीन पर पड़ी है और मेख उस की कनपटी में से गुज़रकर ज़मीन में गड़ गई है।

23 उस दिन अल्लाह ने कनानी बादशाह याबीन को इसराइलियों के सामने ज़ेर कर दिया। 24 इसके बाद उनकी ताकत बढ़ती गई जबकि याबीन कमज़ोर होता गया और आखिरकार इसराइलियों के हाथों तबाह हो गया।

## 5

### दबोरा और बरक का गीत

1 फ़तह के दिन दबोरा ने बरक बिन अबीनुअम के साथ यह गीत गाया,

2 “अल्लाह की सताइश हो! क्योंकि इसराइल के सरदारों ने राहनुमाई की, और अवाम निकलने के लिए तैयार हुए।

3 ऐ बादशाहो, सुनो! ऐ हुक्मरानो, मेरी बात पर तवज्जुह दो! मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगी, रब इसराइल के खुदा की मद्हसराई करूँगी।

4 ऐ रब, जब तू सईर से निकल आया और अदोम के खुले मैदान से रवाना हुआ तो ज़मीन काँप उठी और आसमान से पानी टपकने लगा, बादलों से बारिश बरसने लगी।

5 कोहे-सीना के रब के हुज़ूर पहाड़ हिलने लगे, रब इसराइल के खुदा के सामने वह कपकपाने लगे।

6 शमजर बिन अनात और याएल के दिनों में सफ़र के पक्के और सीधे रास्ते खाली रहे और मुसाफ़िर उनसे हटकर बल खाते हुए छोटे छोटे रास्तों पर चलकर अपनी मनज़िल तक पहुँचते थे।

7 देहात की ज़िंदगी सूनी हो गई। गाँव में रहना मुश्किल था जब तक मैं, दबोरा जो इसराइल की माँ हूँ खड़ी न हुई।

8 शहर के दरवाजों पर जंग छिड़ गई जब उन्होंने नए माबूदों को चुन लिया। उस वक़्त इसराईल के 40,000 मर्दों के पास एक भी ढाल या नेजा न था।

9 मेरा दिल इसराईल के सरदारों के साथ है और उनके साथ जो खुशी से जंग के लिए निकले। रब की सताइश करो!

10 ऐ तुम जो सफ़ेद गधों पर कपड़े बिछाकर उन पर सवार हो, अल्लाह की तमजीद करो! ऐ तुम जो पैदल चल रहे हो, अल्लाह की तारीफ़ करो!

11 सुनो! जहाँ जानवरों को पानी पिलाया जाता है वहाँ लोग रब के नजातबख़्श कामों की तारीफ़ कर रहे हैं, उन नजातबख़्श कामों की जो उसने इसराईल के देहातियों की खातिर किए। तब रब के लोग शहर के दरवाजों के पास उतर आए।

12 ऐ दबोरा, उठें, उठें! उठें, हाँ उठें और गीत गाएँ! ऐ बरक, खड़े हो जाएँ! ऐ अबीनुअम के बेटे, अपने कैदियों को बाँधकर ले जाएँ!

13 फिर बचे हुए फ़ौजी पहाड़ी इलाके से उतरकर क्रौम के शुरफ़ा के पास आए, रब की क्रौम सूरमाओं के साथ मेरे पास उतर आईं।

14 इफ़राईम से जिसकी जड़ें अमालीक में हैं वह उतर आए, और बिनयमीन के मर्द उनके पीछे हो लिए। मकीर से हुक्मरान और ज़बूलून से सिपहसालार उतर आए।

15 इशकार के रईस भी दबोरा के साथ थे, और उसके फ़ौजी बरक के पीछे होकर वादी में दौड़ आए। लेकिन रुबिन का कबीला अपने इलाके में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

16 तू क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा रहा? क्या गल्लों के दरमियान चरवाहों की बाँसरियों की आवाज़ें सुनने के लिए? रुबिन का कबीला अपने इलाके में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

17 जिलियाद के घराने दरियाए-यरदन के मशरिक में ठहरे रहे। और दान का कबीला, वह क्यों बहरी जहाज़ों के पास रहा? आशर का कबीला भी साहिल पर बैठा रहा, वह आराम से अपनी बंदरगाहों के पास ठहरा रहा,

18 जबकि ज़बूलून और नफ़ताली अपनी जान पर खेलकर मैदाने-जंग में आ गए।

19 बादशाह आए और लड़े, कनान के बादशाह मजिदो नदी पर तानक के पास इसराईल से लड़े। लेकिन वहाँ से वह चाँदी का लूटा हुआ माल वापस न लाए।

20 आसमान से सितारों ने सीसरा पर हमला किया, अपनी आसमानी राहों को छोड़कर वह उससे और उस की क्रौम से लड़ने आए।

21 कैसोन नदी उन्हें उड़ा ले गई, वह नदी जो कदीम ज़माने से बहती है। ऐ मेरी जान, मज़बूती से आगे चलती जा!

22 उस वक्रत टापों का बड़ा शोर सुनाई दिया। दुश्मन के ज़बरदस्त घोड़े सरपट दौड़ रहे थे।

23 रब के फ़रिश्ते ने कहा, 'मीरोज़ शहर पर लानत करो, उसके बाशिंदों पर ख़ूब लानत करो! क्योंकि वह रब की मदद करने न आए, वह सूरमाओं के खिलाफ़ रब की मदद करने न आए।'

24 हिबर कीनी की बीवी मुबारक है! ख़ैमों में रहनेवाली औरतों में से वह सबसे मुबारक है!

25 जब सीसरा ने पानी माँगा तो याएल ने उसे दूध पिलाया। शानदार प्याले में लस्सी डालकर वह उसे उसके पास लाई।

26 लेकिन फिर उसने अपने हाथ से मेख और अपने दहने हाथ से मज़दूरों का हथोड़ा पकड़कर सीसरा का सर फोड़ दिया, उस की खोपड़ी टुकड़े टुकड़े करके उस की कनपटी को छेद दिया।

27 उसके पाँवों में वह तड़प उठा। वह गिरकर वहीं पड़ा रहा। हाँ, वह उसके पाँवों में गिरकर हलाक हुआ।

28 सीसरा की माँ ने खिड़की में से झाँका और दरीचे में से देखती देखती रोती रही, 'उसके रथ के पहुँचने में इतनी देर क्यों हो रही है? रथों की आवाज़ अब तक क्यों सुनाई नहीं दे रही?'

29 उस की दानिशमंद खवातीन उसे तसल्ली देती हैं और वह खुद उनकी बात दोहराती है, 30 'वह लूटा हुआ माल आपस में बाँट रहे होंगे। हर मर्द के लिए एक दो लड़कियाँ और सीसरा के लिए रंगदार लिबास होगा। हाँ, वह रंगदार लिबास और मेरी गरदन को सजाने के लिए दो नफ़ीस रंगदार कपड़े ला रहे होंगे।'

31 ऐ रब, तेरे तमाम दुश्मन सीसरा की तरह हलाक हो जाएँ! लेकिन जो तुझसे प्यार करते हैं वह पूरे ज़ोर से तुलू होनेवाले सूरज की मानिंद हों।”

बरक की इस फतह के बाद इसराईल में 40 साल अमनो-अमान कायम रहा।

## 6

मिदियानी इसराईलियों को दबाते हैं

1 फिर इसराईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो रब को बुरा लगा, और उसने उन्हें सात साल तक मिदियानियों के हवाले कर दिया। 2 मिदियानियों का दबाव इतना ज्यादा बढ़ गया कि इसराईलियों ने उनसे पनाह लेने के लिए पहाड़ी इलाके में शिगाफ, गार और गढियाँ बना लीं। 3 क्योंकि जब भी वह अपनी फसलें लगाते तो मिदियानी, अमालीकी और मशरिक के दीगर फौजी उन पर हमला करके 4 मुल्क को घेर लेते और फसलों को गज्जा शहर तक तबाह करते। वह खानेवाली कोई भी चीज़ नहीं छोड़ते थे, न कोई भेड़, न कोई बैल, और न कोई गधा। 5 और जब वह अपने मवेशियों और खैमों के साथ पहुँचते तो टिट्टियों के दलों की मानिंद थे। इतने मर्द और ऊँट थे कि उनको गिना नहीं जा सकता था। यों वह मुल्क पर चढ़ आते थे ताकि उसे तबाह करें। 6 इसराईली मिदियान के सबब से इतने पस्तहाल हुए कि आखिरकार मदद के लिए रब को पुकारने लगे।

7-8 तब उसने उनमें एक नबी भेज दिया जिसने कहा, “रब इसराईल का खुदा फरमाता है कि मैं ही तुम्हें मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 9 मैंने तुम्हें मिसर के हाथ से और उन तमाम ज़ालिमों के हाथ से बचा लिया जो तुम्हें दबा रहे थे। मैं उन्हें तुम्हारे आगे आगे निकालता गया और उनकी ज़मीन तुम्हें दे दी। 10 उस वक़्त मैंने तुम्हें बताया, ‘मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। जिन अमोरियों के मुल्क में तुम रह रहे हो उनके देवताओं का ख़ौफ मत मानना। लेकिन तुमने मेरी न सुनी’।”

रब जिदौन को बुलाता है

11 एक दिन रब का फ़रिश्ता आया और उफ़रा में बलूत के एक दरख़्त के साये में बैठ गया। यह दरख़्त अबियज़र के ख़ानदान के एक आदमी का था जिसका नाम युआस था। वहाँ अंगूर का रस निकालने का हौज़ था, और उसमें युआस का बेटा जिदौन छुपकर गंदम झाड़ रहा था, हौज़ में इसलिए कि गंदम मिदियानियों से

महफूज़ रहे। 12 रब का फ़रिश्ता जिदौन पर जाहिर हुआ और कहा, “ऐ ज़बरदस्त सूरमे, रब तेरे साथ है!”

13 जिदौन ने जवाब दिया, “नहीं जनाब, अगर रब हमारे साथ हो तो यह सब कुछ हमारे साथ क्यों हो रहा है? उसके वह तमाम मोजिजे आज कहाँ नज़र आते हैं जिनके बारे में हमारे बापदादा हमें बताते रहे हैं? क्या वह नहीं कहते थे कि रब हमें मिसर से निकाल लाया? नहीं, जनाब। अब ऐसा नहीं है। अब रब ने हमें तर्क करके मिदियान के हवाले कर दिया है।”

14 रब ने उस की तरफ मुड़कर कहा, “अपनी इस ताक़त में जा और इसराईल को मिदियान के हाथ से बचा। मैं ही तुझे भेज रहा हूँ।”

15 लेकिन जिदौन ने एतराज़ किया, “ऐ रब, मैं इसराईल को किस तरह बचाऊँ? मेरा ख़ानदान मनस्सी के कबीले का सबसे कमज़ोर ख़ानदान है, और मैं अपने बाप के घर में सबसे छोटा हूँ।”

16 रब ने जवाब दिया, “मैं तेरे साथ हूँगा, और तू मिदियानियों को यों मारेगा जैसे एक ही आदमी को।”

17 तब जिदौन ने कहा, “अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र हो तो मुझे कोई इलाही निशान दिखा ताकि साबित हो जाए कि वाक़ई रब ही मेरे साथ बात कर रहा है। 18 मैं अभी जाकर क़ुरबानी तैयार करता हूँ और फिर वापस आकर उसे तुझे पेश करूँगा। उस वक़्त तक रवाना न हो जाना।”

रब ने कहा, “ठीक है, मैं तेरी वापसी का इंतज़ार करके ही जाऊँगा।”

19 जिदौन चला गया। उसने बकरी का बच्चा ज़बह करके तैयार किया और पूरे 16 किलोग्राम मैदे से बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर गोश्त को टोकरी में रखकर और उसका शोरबा अलग बरतन में डालकर वह सब कुछ रब के फ़रिश्ते के पास लाया और उसे बलूत के साये में पेश किया।

20 रब के फ़रिश्ते ने कहा, “गोश्त और बेख़मीरी रोटी को लेकर इस पत्थर पर रख दे, फिर शोरबा उस पर उंडेल दे।” जिदौन ने ऐसा ही किया। 21 रब के फ़रिश्ते के हाथ में लाठी थी। अब उसने लाठी के सिरे से गोश्त और बेख़मीरी रोटी को छू दिया। अचानक पत्थर से आग भड़क उठी और ख़ुराक भस्म हो गई। साथ साथ रब का फ़रिश्ता ओझल हो गया।

22 फिर जिदौन को यकीन आया कि यह वाकई रब का फरिश्ता था, और वह बोल उठा, “हाय रब कादिरे-मुतलक! मुझ पर अफसोस, क्योंकि मैंने रब के फरिश्ते को रूबरू देखा है।”

23 लेकिन रब उससे हमकलाम हुआ और कहा, “तेरी सलामती हो। मत डर, तू नहीं मरेगा।”

24 वहीं जिदौन ने रब के लिए कुरबानगाह बनाई और उसका नाम ‘रब सलामत है’ रखा। यह आज तक अबियज़र के खानदान के शहर उफ़रा में मौजूद है।

जिदौन बाल की कुरबानगाह गिरा देता है

25 उसी रात रब जिदौन से हमकलाम हुआ, “अपने बाप के बैलों में से दूसरे बैल को जो सात साल का है चुन ले। फिर अपने बाप की वह कुरबानगाह गिरा दे जिस पर बाल देवता को कुरबानियाँ चढ़ाई जाती हैं, और यसीरत देवी का वह खंबा काट डाल जो साथ खड़ा है। 26 इसके बाद उसी पहाड़ी किले की चोटी पर रब अपने खुदा के लिए सहीह कुरबानगाह बना दे। यसीरत के खंबे की कटी हुई लकड़ी और बैल को उस पर रखकर मुझे भस्म होनेवाली कुरबानी पेश कर।”

27 चुनाँचे जिदौन ने अपने दस नौकरों को साथ लेकर वह कुछ किया जिसका हुक्म रब ने उसे दिया था। लेकिन वह अपने खानदान और शहर के लोगों से डरता था, इसलिए उसने यह काम दिन के बजाए रात के वक़्त किया।

28 सुबह के वक़्त जब शहर के लोग उठे तो देखा कि बाल की कुरबानगाह ढा दी गई है और यसीरत देवी का साथवाला खंबा काट दिया गया है। इनकी जगह एक नई कुरबानगाह बनाई गई है जिस पर बैल को चढ़ाया गया है। 29 उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “किसने यह किया?” जब वह इस बात की तफ़्तीश करने लगे तो किसी ने उन्हें बताया कि जिदौन बिन युआस ने यह सब कुछ किया है।

30 तब वह युआस के घर गए और तक्राज़ा किया, “अपने बेटे को घर से निकाल लाएँ। लाज़िम है कि वह मर जाए, क्योंकि उसने बाल की कुरबानगाह को गिराकर साथवाला यसीरत देवी का खंबा भी काट डाला है।”

31 लेकिन युआस ने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, “क्या आप बाल के दिफ़ा में लड़ना चाहते हैं? जो भी बाल के लिए लड़ेगा उसे कल सुबह तक मार दिया जाएगा। अगर बाल वाकई खुदा है तो वह खुद अपने दिफ़ा में लड़े जब कोई उस की कुरबानगाह को ढा दे।”

32 चूँकि जिदौन ने बाल की कुरबानगाह गिरा दी थी इसलिए उसका नाम यरूबाल यानी 'बाल उससे लड़े' पड़ गया।

जिदौन अल्लाह से निशान माँगता है

33 कुछ देर के बाद तमाम मिदियानी, अमालीकी और दूसरी मशरिकी क्रौमें जमा हुई और दरियाए-यरदन को पार करके अपने डेरें मैदाने-यज़्ज़एल में लगाए। 34 फिर रब का रूह जिदौन पर नाज़िल हुआ। उसने नरसिंगा फूँककर अबियज़र के खानदान के मर्दों को अपने पीछे हो लेने के लिए बुलाया। 35 साथ साथ उसने अपने कासिदों को मनस्सी के कबीले और आशर, ज़बूलून और नफ़ताली के कबीलों के पास भी भेज दिया। तब वह भी आए और जिदौन के मर्दों के साथ मिलकर उसके पीछे हो लिए।

36 जिदौन ने अल्लाह से दुआ की, "अगर तू वाकई इसराईल को अपने वादे के मुताबिक मेरे ज़रीए बचाना चाहता है 37 तो मुझे यकीन दिला। मैं रात को ताज़ा कतरी हुई ऊन गंदुम गाहने के फ़र्श पर रख दूँगा। कल सुबह अगर सिर्फ़ ऊन पर ओस पड़ी हो और इर्दगिर्द का सारा फ़र्श खुश्क हो तो मैं जान लूँगा कि वाकई तू अपने वादे के मुताबिक इसराईल को मेरे ज़रीए बचाएगा।"

38 वही कुछ हुआ जिसकी दरखास्त जिदौन ने की थी। अगले दिन जब वह सुबह-सवेरे उठा तो ऊन ओस से तर थी। जब उसने उसे निचोड़ा तो इतना पानी था कि बरतन भर गया।

39 फिर जिदौन ने अल्लाह से कहा, "मुझसे गुस्से न हो जाना अगर मैं तुझसे एक बार फिर दरखास्त करूँ। मुझे एक आखिरी दफ़ा ऊन के ज़रीए तेरी मरज़ी जाँचने की इजाज़त दे। इस दफ़ा ऊन खुश्क रहे और इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी हो।" 40 उस रात अल्लाह ने ऐसा ही किया। सिर्फ़ ऊन खुश्क रही जबकि इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी थी।

## 7

अल्लाह जिदौन के साथियों को चुन लेता है

1 सुबह-सवेरे यरूबाल यानी जिदौन अपने तमाम लोगों को साथ लेकर हरोद चश्मे के पास आया। वहाँ उन्होंने अपने डेरें लगाए। मिदियानियों ने अपनी ख़ैमागाह उनके शिमाल में मोरिह पहाड़ के दामन में लगाई हुई थी।



2 रब ने जिदौन से कहा, “तेरे पास ज़्यादा लोग हैं! मैं इस किस्म के बड़े लशकर को मिदियानियों पर फ़तह नहीं दूँगा, वरना इसराईली मेरे सामने डींगें मारकर कहेंगे, ‘हमने अपनी ही ताकत से अपने आपको बचाया है!’” 3 इसलिए लशकरगाह में एलान कर कि जो डर के मारे परेशान हो वह अपने घर वापस चला जाए।” जिदौन ने यों किया तो 22,000 मर्द वापस चले गए जबकि 10,000 जिदौन के पास रहे।

4 लेकिन रब ने दुबारा जिदौन से बात की, “अभी तक ज़्यादा लोग हैं! इनके साथ उतरकर चश्मे के पास जा। वहाँ मैं उन्हें जाँचकर उनको मुर्करर करूँगा जिन्हें तेरे साथ जाना है।” 5 चुनाँचे जिदौन अपने आदमियों के साथ चश्मे के पास उतर आया। रब ने उसे हुक्म दिया, “जो भी अपना हाथ पानी से भरकर उसे कुत्ते की तरह चाट ले उसे एक तरफ़ खड़ा कर। दूसरी तरफ़ उन्हें खड़ा कर जो घुटने टेककर पानी पीते हैं।” 6 300 आदमियों ने अपना हाथ पानी से भरकर उसे चाट लिया जबकि बाक़ी सब पीने के लिए झुक गए।

7 फिर रब ने जिदौन से फ़रमाया, “मैं इन 300 चाटनेवाले आदमियों के ज़रीए इसराईल को बचाकर मिदियानियों को तेरे हवाले कर दूँगा। बाक़ी तमाम मर्दों को फ़ारिग कर। वह सब अपने अपने घर वापस चले जाएँ।” 8 चुनाँचे जिदौन ने बाक़ी तमाम आदमियों को फ़ारिग कर दिया। सिर्फ़ मुर्कररा 300 मर्द रह गए। अब यह दूसरों की ख़ुराक और नरसिंगे अपने पास रखकर जंग के लिए तैयार हुए। उस वक़्त मिदियानी ख़ैमागाह इसराईलियों के नीचे वादी में थी।

### मिदियानियों पर जिदौन की फ़तह

9 जब रात हुई तो रब जिदौन से हमकलाम हुआ, “उठ, मिदियानी ख़ैमागाह के पास उतरकर उस पर हमला कर, क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूँगा।” 10 लेकिन अगर तू इससे डरता है तो पहले अपने नौकर फ़ूराह के साथ उतरकर 11 वह बातें सुन ले जो वहाँ के लोग कह रहे हैं। तब उन पर हमला करने की ज़रूरत बढ़ जाएगी।”

जिदौन फ़ूराह के साथ ख़ैमागाह के किनारे के पास उतर आया। 12 मिदियानी, अमालीक़ी और मशरि़क़ के दीगर फ़ौज़ी टिड्डियों के दल की तरह वादी में फैले हुए थे। उनके ऊँट साहिल की रेत की तरह बेशुमार थे। 13 जिदौन दबे पाँव दुश्मन के इतने करीब पहुँच गया कि उनकी बातें सुन सकता था। ऐन उस वक़्त एक फ़ौज़ी दूसरे को अपना ख़ाब सुना रहा था, “मैंने ख़ाब में देखा कि जौ की बड़ी

रोटी लुढ़कती लुढ़कती हमारी खैमागाह में उतर आई। यहाँ वह इतनी शिद्धत से खैमे से टकरा गई कि खैमा उलटकर ज़मीनबोस हो गया।” 14 दूसरे ने जवाब दिया, “इसका सिर्फ़ यह मतलब हो सकता है कि इसराईली मर्द जिदौन बिन युआस की तलवार ग़ालिब आएगी! अल्लाह उसे मिदियानियों और पूरी लशकरगाह पर फ़तह देगा।”

15 खाब और उस की ताबीर सुनकर जिदौन ने अल्लाह को सिजदा किया। फिर उसने इसराईली खैमागाह में वापस आकर एलान किया, “उठें! रब ने मिदियानी लशकरगाह को तुम्हारे हवाले कर दिया है।” 16 उसने अपने 300 मर्दों को सौ सौ के तीन गुरोहों में तकसीम करके हर एक को एक नरसिंगा और एक घड़ा दे दिया। हर घड़े में मशाल थी। 17-18 उसने हुक्म दिया, “जो कुछ मैं करूँगा उस पर गौर करके वही कुछ करें। पूरी खैमागाह को घेर लें और ऐन वही कुछ करें जो मैं करूँगा। जब मैं अपने सौ लोगों के साथ खैमागाह के किनारे पहुँचूँगा तो हम अपने नरसिंगों को बजा देंगे। यह सुनते ही आप भी यही कुछ करें और साथ साथ नारा लगाएँ, ‘रब के लिए और जिदौन के लिए!’”

19 तकर्रीबन आधी रात को जिदौन अपने सौ मर्दों के साथ मिदियानी खैमागाह के किनारे पहुँच गया। थोड़ी देर पहले पहरेदार बदल गए थे। अचानक इसराईलियों ने अपने नरसिंगों को बजाया और अपने घड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 20 फ़ौरन सौ सौ के दूसरे दो गुरोहों ने भी ऐसा ही किया। अपने दहने हाथ में नरसिंगा और बाएँ हाथ में भड़कती मशाल पकड़कर वह नारा लगाते रहे, “रब के लिए और जिदौन के लिए!” 21 लेकिन वह खैमागाह में दाखिल न हुए बल्कि वहीं उसके इर्दगिर्द खड़े रहे। दुश्मन में बड़ी अफ़रा-तफ़री मच गई। चीखते-चिल्लाते सब भाग जाने की कोशिश करने लगे। 22 जिदौन के 300 आदमी अपने नरसिंगे बजाते रहे जबकि रब ने खैमागाह में ऐसी गड़बड़ पैदा की कि लोग एक दूसरे से लड़ने लगे। आखिरकार पूरा लशकर बैत-सित्ता, सरिरात और अबील-मह्ला की सरहद तक फ़रार हुआ जो तब्बात के करीब है।

23 फिर जिदौन ने नफ़ताली, आशर और पूरे मनस्सी के मर्दों को बुला लिया, और उन्होंने मिलकर मिदियानियों का ताक़्क़ुब किया। 24 उसने अपने कासिदों के ज़रीए इफ़राईम के पूरे पहाड़ी इलाके के बाशिदों को भी पैगाम भेज दिया, “उतर आएँ और मिदियानियों को भाग जाने से रोकें! बैत-बारा तक उन तमाम जगहों पर

कब्जा कर लें जहाँ दुश्मन दरियाए-यरदन को पा-प्यादा पार कर सकता है।”

इफराईमी मान गए, <sup>25</sup> और उन्होंने दो मिदियानी सरदारों को पकड़कर उनके सर क्लम कर दिए। सरदारों के नाम ओरेब और ज़एब थे, और जहाँ उन्हें पकड़ा गया उन जगहों के नाम ‘ओरेब की चटान’ और ‘ज़एब का अंगूर का रस निकालनेवाला हौज़’ पड़ गया। इसके बाद वह दुबारा मिदियानियों का ताक्कुब करने लगे। दरियाए-यरदन को पार करने पर उनकी मुलाकात जिदौन से हुई, और उन्होंने दोनों सरदारों के सर उसके सुपर्द कर दिए।

## 8

इफराईम नाराज़ हो जाता है

1 लेकिन इफराईम के मर्दों ने शिकायत की, “आपने हमसे कैसा सुल्क किया? आपने हमें क्यों नहीं बुलाया जब मिदियान से लड़ने गए?” ऐसी बातें करते करते उन्होंने जिदौन के साथ सख्त बहस की। <sup>2</sup> लेकिन जिदौन ने जवाब दिया, “क्या आप मुझसे कहीं ज्यादा कामयाब न हुए? और जो अंगूर फसल जमा करने के बाद इफराईम के बागों में रह जाते हैं क्या वह मेरे छोटे खानदान अबियज़र की पूरी फसल से ज्यादा नहीं होते? <sup>3</sup> अल्लाह ने तो मिदियान के सरदारों ओरेब और ज़एब को आपके हवाले कर दिया। इसकी निसबत मुझसे क्या कामयाबी हासिल हुई है?” यह सुनकर इफराईम के मर्दों का गुस्सा ठंडा हो गया।

सुक्कात और फनुएल जिदौन की मदद नहीं करते

<sup>4</sup> जिदौन अपने 300 मर्दों समेत दरियाए-यरदन को पार कर चुका था। दुश्मन का ताक्कुब करते करते वह थक गए थे। <sup>5</sup> इसलिए जिदौन ने करीब के शहर सुक्कात के बाशिंदों से गुज़ारिश की, “मेरे फ़ौजियों को कुछ रोटी दे दें। वह थक गए हैं, क्योंकि हम मिदियानी सरदार जिबह और ज़लमुन्ना का ताक्कुब कर रहे हैं।” <sup>6</sup> लेकिन सुक्कात के बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, “हम आपके फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप जिबह और ज़लमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?” <sup>7</sup> यह सुनकर जिदौन ने कहा, “ज्योंही रब इन दो सरदारों जिबह और ज़लमुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा मैं तुमको रेगिस्तान की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकारों से गाहकर तबाह कर दूँगा।”

8 वह आगे निकलकर फ्रनुएल शहर पहुँच गया। वहाँ भी उसने रोटी माँगी, लेकिन फ्रनुएल के बाशिंदों ने सुक्कात का-सा जवाब दिया। 9 यह सुनकर उसने कहा, “जब मैं सलामती से वापस आऊँगा तो तुम्हारा यह बुर्ज गिरा दूँगा!”

### मिदियानियों पर पूरी फ़तह

10 अब ज़िबह और ज़लमुन्ना करकूर पहुँच गए थे। 15,000 अफ़राद उनके साथ रह गए थे, क्योंकि मशरिकी इत्हादियों के 1,20,000 तलवारों से लैस फ़ौजी हलाक हो गए थे। 11 जिदौन ने मिदियानियों के पीछे चलते हुए खानाबदोशों का वह रास्ता इस्तेमाल किया जो नूबह और युगबहा के मशरिक में है। इस तरीके से उसने उनकी लशकरगाह पर उस वक़्त हमला किया जब वह अपने आपको महफूज़ समझ रहे थे। 12 दुश्मन में अफ़रा-तफ़री पैदा हुई और ज़िबह और ज़लमुन्ना फ़रार हो गए। लेकिन जिदौन ने उनका ताक़्क़ुब करते करते उन्हें पकड़ लिया।

13 इसके बाद जिदौन लौटा। वह अभी हरिस के दर्रा से उतर रहा था 14 कि सुक्कात के एक जवान आदमी से मिला। जिदौन ने उसे पकड़कर मजबूर किया कि वह शहर के राहनुमाओं और बुजुर्गों की फ़हरिस्त लिखकर दे। 77 बुजुर्ग थे। 15 जिदौन उनके पास गया और कहा, “देखो, यह हैं ज़िबह और ज़लमुन्ना! तुमने इन्हीं की वजह से मेरा मज़ाक़ उड़ाकर कहा था कि हम आपके थकेहारे फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप ज़िबह और ज़लमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?” 16 फिर जिदौन ने शहर के बुजुर्गों को गिरिफ़्तार करके उन्हें काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाहकर सबक़ सिखाया। 17 फिर वह फ्रनुएल गया और वहाँ का बुर्ज गिराकर शहर के मर्दों को मार डाला।

18 इसके बाद जिदौन ज़िबह और ज़लमुन्ना से मुखातिब हुआ। उसने पूछा, “उन आदमियों का हुलिया कैसा था जिन्हें तुमने तबूर पहाड़ पर कत्ल किया?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह आप जैसे थे, हर एक शहज़ादा लग रहा था।”

19 जिदौन बोला, “वह मेरे सगे भाई थे। रब की हयात की क़सम, अगर तुम उनको ज़िंदा छोड़ते तो मैं तुम्हें हलाक न करता।”

20 फिर वह अपने पहलौठे यतर से मुखातिब होकर बोला, “इनको मार डालो!” लेकिन यतर अपनी तलवार मियान से निकालने से झिजका, क्योंकि वह अभी बच्चा था और डरता था। 21 तब ज़िबह और ज़लमुन्ना ने कहा, “आप ही हमें मार दें! क्योंकि जैसा आदमी वैसी उस की ताक़त!” जिदौन ने खड़े होकर उन्हें

तलवार से मार डाला और उनके ऊँटों की गरदनों पर लगे तावीज़ उतारकर अपने पास रखे।

जिदौन के सबब से इसराईल बुतपरस्ती में उलझ जाता है

22 इसराईलियों ने जिदौन के पास आकर कहा, “आपने हमें मिदियानियों से बचा लिया है, इसलिए हम पर हुकूमत करें, आप, आपके बाद आपका बेटा और उसके बाद आपका पोता।”

23 लेकिन जिदौन ने जवाब दिया, “न मैं आप पर हुकूमत करूँगा, न मेरा बेटा। रब ही आप पर हुकूमत करेगा। 24 मेरी सिर्फ़ एक गुज़ारिश है। हर एक मुझे अपने लूटे हुए माल में से एक एक बाली दे दे।” बात यह थी कि दुश्मन के तमाम अफ़राद ने सोने की बालियाँ पहन रखी थीं, क्योंकि वह इसमाईली थे।

25 इसराईलियों ने कहा, “हम खुशी से बाली देंगे।” एक चादर ज़मीन पर बिछाकर हर एक ने एक एक बाली उस पर फेंक दी। 26 सोने की इन बालियों का वज़न तकरीबन 20 किलोग्राम था। इसके अलावा इसराईलियों ने मुख्तलिफ़ तावीज़, कान के आवेज़े, अरगवानी रंग के शाही लिबास और ऊँटों की गरदनों में लगी क्रीमती जंजीरें भी दे दीं।

27 इस सोने से जिदौन ने एक अफ़ोद \* बनाकर उसे अपने आबाई शहर उफ़रा में खड़ा किया जहाँ वह उसके और तमाम खानदान के लिए फंदा बन गया। न सिर्फ़ यह बल्कि पूरा इसराईल जिना करके बुत की पूजा करने लगा।

28 उस वक़्त मिदियान ने ऐसी शिकस्त खाई कि बाद में इसराईल के लिए ख़तरे का बाइस न रहा। और जितनी देर जिदौन जिंदा रहा यानी 40 साल तक मुल्क में अमनो-अमान कायम रहा।

29 जंग के बाद जिदौन बिन युआस दुबारा उफ़रा में रहने लगा। 30 उस की बहुत-सी बीवियाँ और 70 बेटे थे। 31 उस की एक दाशता भी थी जो सिकम शहर में रिहाइशपज़ीर थी और जिसके एक बेटा पैदा हुआ। जिदौन ने बेटे का नाम अबीमलिक रखा। 32 जिदौन उम्रसीदा था जब फ़ौत हुआ। उसे अबियज़रियों के शहर उफ़रा में उसके बाप युआस की क़ब्र में दफ़नाया गया।

33 जिदौन के मरते ही इसराईली दुबारा जिना करके बाल के बुतों की पूजा करने लगे। वह बाल-बरीत को अपना खास देवता बनाकर 34 रब अपने ख़ुदा को

\* **8:27** आम तौर पर इब्रानी में अफ़ोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़रूज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

भूल गए जिसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचा लिया था। 35 उन्होंने यरूबाल यानी जिदौन के खानदान को भी उस एहसान के लिए कोई मेहरबानी न दिखाई जो जिदौन ने उन पर किया था।

## 9

अबीमलिक बादशाह बन जाता है

1 एक दिन यरूबाल यानी जिदौन का बेटा अबीमलिक अपने मामुओं और माँ के बाकी रिश्तेदारों से मिलने के लिए सिकम गया। उसने उनसे कहा, 2 “सिकम शहर के तमाम बाशिंदों से पूछें, क्या आप अपने आप पर जिदौन के 70 बेटों की हुकूमत ज्यादा पसंद करेंगे या एक ही शख्स की? याद रहे कि मैं आपका खूनी रिश्तेदार हूँ।” 3 अबीमलिक के मामुओं ने सिकम के तमाम बाशिंदों के सामने यह बातें दोहराईं। सिकम के लोगों ने सोचा, “अबीमलिक हमारा भाई है” इसलिए वह उसके पीछे लग गए। 4 उन्होंने उसे बाल-बरीत देवता के मंदिर से चाँदी के 70 सिक्के भी दे दिए।

इन पैसों से अबीमलिक ने अपने इर्दगिर्द आवारा और बदमाश आदमियों का गुरोह जमा किया। 5 उन्हें अपने साथ लेकर वह उफ़रा पहुँचा जहाँ बाप का खानदान रहता था। वहाँ उसने अपने तमाम भाइयों यानी जिदौन के 70 बेटों को एक ही पत्थर पर क़त्ल कर दिया। सिर्फ़ यूताम जो जिदौन का सबसे छोटा बेटा था कहीं छुपकर बच निकला। 6 इसके बाद सिकम और बैत-मिल्लो के तमाम लोग उस बलूत के साये में जमा हुए जो सिकम के सतून के पास था। वहाँ उन्होंने अबीमलिक को अपना बादशाह मुक़र्रर किया।

यूताम की अबीमलिक और सिकम पर लानत

7 जब यूताम को इसकी इत्तला मिली तो वह गरिज़ीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और ऊँची आवाज़ से चिल्लाया, “ऐ सिकम के बाशिंदो, सुनें मेरी बात! सुनें अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह आपकी भी सुने।” 8 एक दिन दरख्तों ने फ़ैसला किया कि हम पर कोई बादशाह होना चाहिए। वह उसे चुनने और मसह करने के लिए निकले। पहले उन्होंने ज़ैतून के दरख्त से बात की, ‘हमारे बादशाह बन जाँ!’ 9 लेकिन ज़ैतून के दरख्त ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना तेल पैदा करने से बाज़ आऊँ जिसकी अल्लाह और इनसान इतनी क़दर करते हैं ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ 10 इसके बाद दरख्तों ने अंजीर के दरख्त से

बात की, 'आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!' 11 लेकिन अंजीर के दरख्त ने जवाब दिया, 'क्या मैं अपना मीठा और अच्छा फल लाने से बाज़ आऊँ ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!' 12 फिर दरख्तों ने अंगूर की बेल से बात की, 'आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!' 13 लेकिन अंगूर की बेल ने जवाब दिया, 'क्या मैं अपना रस पैदा करने से बाज़ आऊँ जिससे अल्लाह और इनसान खुश हो जाते हैं ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!' 14 आखिरकार दरख्त काँटेदार झाड़ी के पास आए और कहा, 'आएँ और हमारे बादशाह बन जाएँ!' 15 काँटेदार झाड़ी ने जवाब दिया, 'अगर तुम वाकई मुझे मसह करके अपना बादशाह बनाना चाहते हो तो आओ और मेरे साये में पनाह लो। अगर तुम ऐसा नहीं करना चाहते तो झाड़ी से आग निकलकर लुबनान के देवदार के दरख्तों को भस्म कर दे'।"

16 यूताम ने बात जारी रखकर कहा, "अब मुझे बताएँ, क्या आपने वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया जब आपने अबीमलिक को अपना बादशाह बना लिया? क्या आपने जिदौन और उसके खानदान के साथ अच्छा सुलूक किया? क्या आपने उस पर शूक्रगुज़ारी का वह इज़हार किया जिसके लायक वह था? 17 मेरे बाप ने आपकी खातिर जंग की। आपको मिदियानियों से बचाने के लिए उसने अपनी जान ख़तरे में डाल दी। 18 लेकिन आज आप जिदौन के घराने के खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं। आपने उसके 70 बेटों को एक ही पत्थर पर ज़बह करके उस की लौंडी के बेटे अबीमलिक को सिकम का बादशाह बना लिया है, और यह सिर्फ़ इसलिए कि वह आपका रिश्तेदार है। 19 अब सुनें! अगर आपने जिदौन और उसके खानदान के साथ वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया है तो फिर अल्लाह करे कि अबीमलिक आपके लिए ख़ुशी का बाइस हो और आप उसके लिए। 20 लेकिन अगर ऐसा नहीं था तो अल्लाह करे कि अबीमलिक से आग निकलकर आप सबको भस्म कर दे जो सिकम और बैत-मिल्लो में रहते हैं! और आग आपसे निकलकर अबीमलिक को भी भस्म कर दे!" 21 यह कहकर यूताम ने भागकर बैर में पनाह ली, क्योंकि वह अपने भाई अबीमलिक से डरता था।

सिकम के बाशिंदे अबीमलिक के खिलाफ़ हो जाते हैं

22 अबीमलिक की इसराईल पर हुकूमत तीन साल तक रही। 23 लेकिन फिर अल्लाह ने एक बुरी रूह भेज दी जिसने अबीमलिक और सिकम के बाशिंदों में नाइतफ़ाक़ी पैदा कर दी। नतीजे में सिकम के लोगों ने बगावत की। 24 यों

अल्लाह ने उसे इसकी सजा दी कि उसने अपने भाइयों यानी जिदौन के 70 बेटों को कत्ल किया था। सिकम के बाशिंदों को भी सजा मिली, क्योंकि उन्होंने इसमें अबीमलिक की मदद की थी।

25 उस वक़्त सिकम के लोग इर्दगिर्द की चोटियों पर चढ़कर अबीमलिक की ताक में बैठ गए। जो भी वहाँ से गुज़रा उसे उन्होंने लूट लिया। इस बात की ख़बर अबीमलिक तक पहुँच गई।

26 उन दिनों में एक आदमी अपने भाइयों के साथ सिकम आया जिसका नाम जाल बिन अबद था। सिकम के लोगों से उसका अच्छा-खासा ताल्लुक बन गया, और वह उस पर एतबार करने लगे। 27 अंगूर की फ़सल पक गई थी। लोग शहर से निकले और अपने बागों में अंगूर तोड़कर उनसे रस निकालने लगे। फिर उन्होंने अपने देवता के मंदिर में जशन मनाया। जब वह ख़ूब खा-पी रहे थे तो अबीमलिक पर लानत करने लगे। 28 जाल बिन अबद ने कहा, “सिकम का अबीमलिक के साथ क्या वास्ता कि हम उसके ताबे रहें? वह तो सिर्फ़ यरूबाल का बेटा है, जिसका नुमाइंदा ज़बूल है। उस की ख़िदमत मत करना बल्कि सिकम के बानी हमोर के लोगों की! हम अबीमलिक की ख़िदमत क्यों करें? 29 काश शहर का इंतज़ाम मेरे हाथ में होता! फिर मैं अबीमलिक को जल्द ही निकाल देता। मैं उसे चैलेंज देता कि आओ, अपने फ़ौजियों को जमा करके हमसे लड़ो!”

### अबीमलिक सिकम से लड़ता है

30 जाल बिन अबद की बात सुनकर सिकम का सरदार ज़बूल बड़े गुस्से में आ गया। 31 अपने कासिदों की मारिफ़त उसने अबीमलिक को चुपके से इतला दी, “जाल बिन अबद अपने भाइयों के साथ सिकम आ गया है जहाँ वह पूरे शहर को आपके खिलाफ़ खड़े हो जाने के लिए उकसा रहा है। 32 अब ऐसा करें कि रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत इधर आएँ और खेतों में ताक में रहें। 33 सुबह-सवेरे जब सूरज तुलू होगा तो शहर पर हमला करें। जब जाल अपने आदमियों के साथ आपके खिलाफ़ लड़ने आएगा तो उसके साथ वह कुछ करें जो आप मुनासिब समझते हैं।” 34 यह सुनकर अबीमलिक रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत रवाना हुआ। उसने उन्हें चार ग़रोहों में तकसीम किया जो सिकम को घेरकर ताक में बैठ गए।

35 सुबह के वक़्त जब जाल घर से निकलकर शहर के दरवाज़े में खड़ा हुआ तो अबीमलिक और उसके फ़ौजी अपनी छुपने की जगहों से निकल आए। 36 उन्हें देखकर जाल ने ज़बूल से कहा, “देखो, लोग पहाड़ों की चोटियों से उतर रहे



हैं।” ज़बूल ने जवाब दिया, “नहीं, नहीं, जो आपको आदमी लग रहे हैं वह सिर्फ पहाड़ों के साथे हैं।” 37 लेकिन जाल को तसल्ली न हुई। वह दुबारा बोल उठा, “देखो, लोग दुनिया की नाफ \* से उतर रहे हैं। और एक और गुरोह रम्मालों के बलूत से होकर आ रहा है।” 38 फिर ज़बूल ने उससे कहा, “अब तेरी बड़ी बड़ी बातें कहाँ रहीं? क्या तूने नहीं कहा था, ‘अबीमलिक कौन है कि हम उसके ताबे रहें?’ अब यह लोग आ गए हैं जिनका मज़ाक तूने उड़ाया। जा, शहर से निकलकर उनसे लड़!”

39 तब जाल सिकम के मर्दों के साथ शहर से निकला और अबीमलिक से लड़ने लगा। 40 लेकिन वह हार गया, और अबीमलिक ने शहर के दरवाजे तक उसका ताक़क़ुब किया। भागते भागते सिकम के बहुत-से अफ़राद रास्ते में गिरकर हलाक हो गए। 41 फिर अबीमलिक अरूमा चला गया जबकि ज़बूल ने पीछे रहकर जाल और उसके भाइयों को शहर से निकाल दिया।

42 अगले दिन सिकम के लोग शहर से निकलकर मैदान में आना चाहते थे। जब अबीमलिक को यह खबर मिली 43-44 तो उसने अपनी फ़ौज को तीन गुरोहों में तक़सीम किया। यह गुरोह दुबारा सिकम को घेरकर घात में बैठ गए। जब लोग शहर से निकले तो अबीमलिक अपने गुरोह के साथ छुपने की जगह से निकल आया और शहर के दरवाजे में खड़ा हो गया। बाकी दो गुरोह मैदान में मौजूद अफ़राद पर टूट पड़े और सबको हलाक कर दिया। 45 फिर अबीमलिक ने शहर पर हमला किया। लोग पूरा दिन लड़ते रहे, लेकिन आखिरकार अबीमलिक ने शहर पर क़ब्ज़ा करके तमाम बाशिंदों को मौत के घाट उतार दिया। उसने शहर को तबाह किया और खंडरात पर नमक बिखेरकर उस की हतमी तबाही ज़ाहिर कर दी।

46 जब सिकम के बुर्ज के रहनेवालों को यह इत्तला मिली तो वह एल-बरीत देवता के मंदिर के तहख़ाने में छुप गए। 47 जब अबीमलिक को पता चला 48 तो वह अपने फ़ौजियों समेत ज़लमोन पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसने कुल्हाड़ी से शाख काटकर अपने कंधों पर रख ली और अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया, “जल्दी करो! सब ऐसा ही करो।” 49 फ़ौजियों ने भी शाखें काटीं और फिर अबीमलिक के पीछे लगकर मंदिर के पास वापस आए। वहाँ उन्होंने तमाम लकड़ी तहख़ाने की छत पर जमा करके उसे जला दिया। यों सिकम के बुर्ज के तक़रीबन 1,000 मर्दों-ख़वातीन सब भस्म हो गए।

\* 9:37 मतलब गालिबन कोहे-गरिज़ीम है।

### अबीमलिक की मौत

50 वहाँ से अबीमलिक तैबिज़ के खिलाफ़ बढ़ गया। उसने शहर का मुहासरा करके उस पर कब्ज़ा कर लिया। 51 लेकिन शहर के बीच में एक मज़बूत बुर्ज था। तमाम मदर्नी-खवातीन उसमें फ़रार हुए और बुर्ज के दरवाज़ों पर कुंडी लगाकर छत पर चढ़ गए।

52 अबीमलिक लड़ते लड़ते बुर्ज के दरवाज़े के करीब पहुँच गया। वह उसे जलाने की कोशिश करने लगा 53 तो एक औरत ने चक्की का ऊपर का पाट उसके सर पर फेंक दिया, और उस की खोपड़ी फट गई। 54 जल्दी से अबीमलिक ने अपने सिलाहबरदार को बुलाया। उसने कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे मार दो! वरना लोग कहेंगे कि एक औरत ने मुझे मार डाला।” चुनौचे नौजवान ने अपनी तलवार उसके बदन में से गुज़ार दी और वह मर गया। 55 जब फ़ौजियों ने देखा कि अबीमलिक मर गया है तो वह अपने अपने घर चले गए।

56 यों अल्लाह ने अबीमलिक को उस बदी का बदला दिया जो उसने अपने 70 भाइयों को क़त्ल करके अपने बाप के खिलाफ़ की थी। 57 और अल्लाह ने सिकम के बाशिनदों को भी उनकी शरीर हरकतों की मुनासिब सज़ा दी। यूताम बिन यरूबाल की लानत पूरी हुई।

## 10

### तोला और याईर

1 अबीमलिक की मौत के बाद तोला बिन फ़ुव्वा बिन दोदो इसराईल को बचाने के लिए उठा। वह इशकार के कबीले से था और इफराईम के पहाड़ी इलाके के शहर समीर में रिहाइशपज़ीर था। 2 तोला 23 साल इसराईल का काज़ी रहा। फिर वह फ़ौत हुआ और समीर में दफ़नाया गया।

3 उसके बाद जिलियाद का रहनेवाला याईर काज़ी बन गया। उसने 22 साल इसराईल की राहनुमाई की। 4 याईर के 30 बेटे थे। हर बेटे का एक एक गधा और जिलियाद में एक एक आबादी थी। आज तक इनका नाम ‘हव्वोत-याईर’ यानी याईर की बस्तियाँ हैं। 5 जब याईर इंतक़ाल कर गया तो उसे क्रामोन में दफ़नाया गया।

इसराईल दुबारा ख से दूर हो जाता है

6 याईर की मौत के बाद इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। वह कई देवताओं के पीछे लग गए जिनमें बाल देवता, अस्तारात देवी और शाम, सैदा, मोआब, अम्मोनियों और फिलिस्तियों के देवता शामिल थे। यों वह रब की परस्तिश और खिदमत करने से बाज़ आए। 7 तब उसका गज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें फिलिस्तियों और अम्मोनियों के हवाले कर दिया। 8 उसी साल के दौरान इन कौमों ने जिलियाद में इसराईलियों के उस इलाके पर कब्ज़ा किया जिसमें पुराने ज़माने में अमोरी आबाद थे और जो दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में था। फिलिस्ती और अम्मोनी 18 साल तक इसराईलियों को कुचलते और दबाते रहे। 9 न सिर्फ़ यह बल्कि अम्मोनियों ने दरियाए-यरदन को पार करके यहदाह, बिनयमीन और इफ़राईम के कबीलों पर भी हमला किया।

जब इसराईली बड़ी मुसीबत में थे 10 तो आखिरकार उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा और इकरार किया, “हमने तेरा गुनाह किया है। अपने खुदा को तर्क करके हमने बाल के बुतों की पूजा की है।” 11 रब ने जवाब में कहा, “जब मिसरी, अमोरी, अम्मोनी, फिलिस्ती, 12 सैदानी, अमालीकी और माओनी तुम पर जुल्म करते थे और तुम मदद के लिए मुझे पुकारने लगे तो क्या मैंने तुम्हें न बचाया? 13 इसके बावजूद तुम बार बार मुझे तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करते रहे हो। इसलिए अब से मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। 14 जाओ, उन देवताओं के सामने चीखते-चिल्लाते रहो जिन्हें तुमने चुन लिया है! वही तुम्हें मुसीबत से निकालें।”

15 लेकिन इसराईलियों ने रब से फ़रियाद की, “हमसे ग़लती हुई है। जो कुछ भी तू मुनासिब समझता है वह हमारे साथ कर। लेकिन तू ही हमें आज बचा।” 16 वह अजनबी माबूदों को अपने बीच में से निकालकर रब की दुबारा खिदमत करने लगे। तब वह इसराईल का दुख बरदाशत न कर सका।

इफ़ताह काज़ी बन जाता है

17 उन दिनों में अम्मोनी अपने फ़ौजियों को जमा करके जिलियाद में खैमाज़न हुए। जवाब में इसराईली भी जमा हुए और मिसफ़ाह में अपने खैमे लगाए। 18 जिलियाद के राहनुमाओं ने एलान किया, “हमें ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो हमारे आगे चलकर अम्मोनियों पर हमला करे। जो कोई ऐसा करे वह जिलियाद के तमाम बाशिंदों का सरदार बनेगा।”

# 11

1 उस वक़्त जिलियाद में एक ज़बरदस्त सूरमा बनाम इफ़ताह था। बाप का नाम जिलियाद था जबकि माँ कसबी थी। 2 लेकिन बाप की बीवी के बेटे भी थे। जब बालिग हुए तो उन्होंने इफ़ताह से कहा, “हम मीरास तैरे साथ नहीं बाँटेंगे, क्योंकि तू हमारा सगा भाई नहीं है।” उन्होंने उसे भगा दिया, 3 और वह वहाँ से हिजरत करके मुल्के-तोब में जा बसा। वहाँ कुछ आवारा लोग उसके पीछे हो लिए जो उसके साथ इधर उधर घुमते-फिरते रहे।

4 जब कुछ देर के बाद अम्मोनी फ़ौज इसराईल से लड़ने आई 5 तो जिलियाद के बुजुर्ग इफ़ताह को वापस लाने के लिए मुल्के-तोब में आए। 6 उन्होंने गुज़ारिश की, “आएँ, अम्मोनियों से लड़ने में हमारी राहनुमाई करें।” 7 लेकिन इफ़ताह ने एतराज़ किया, “आप इस वक़्त मेरे पास क्यों आए हैं जब मुसीबत में हैं? आप ही ने मुझसे नफ़रत करके मुझे बाप के घर से निकाल दिया था।”

8 बुजुर्गों ने जवाब दिया, “हम इसलिए आपके पास वापस आए हैं कि आप अम्मोनियों के साथ जंग में हमारी मदद करें। अगर आप ऐसा करें तो हम आपको पूरे जिलियाद का हुक्मरान बना लेंगे।” 9 इफ़ताह ने पूछा, “अगर मैं आपके साथ अम्मोनियों के खिलाफ लड़ूँ और रब मुझे उन पर फ़तह दे तो क्या आप वाकई मुझे अपना हुक्मरान बना लेंगे?” 10 उन्होंने जवाब दिया, “रब हमारा गवाह है! वही हमें सज़ा दे अगर हम अपना वादा पूरा न करें।”

11 यह सुनकर इफ़ताह जिलियाद के बुजुर्गों के साथ मिसफ़ाह गया। वहाँ लोगों ने उसे अपना सरदार और फ़ौज का कमाँडर बना लिया। मिसफ़ाह में उसने रब के हज़ूर वह तमाम बातें दोहराईं जिनका फ़ैसला उसने बुजुर्गों के साथ किया था।

## जंग से गुरेज़ करने की कोशिश

12 फिर इफ़ताह ने अम्मोनी बादशाह के पास अपने कासिदों को भेजकर पूछा, “हमारा आपसे क्या वास्ता कि आप हमसे लड़ने आए हैं?” 13 बादशाह ने जवाब दिया, “जब इसराईली मिसर से निकले तो उन्होंने अरनोन, यब्बोक और यरदन के दरियाओं के दरमियान का इलाका मुझसे छीन लिया। अब उसे झगड़ा किए बग़ैर मुझे वापस कर दो।”

14 फिर इफ़ताह ने अपने कासिदों को दुबारा अम्मोनी बादशाह के पास भेजकर 15 कहा, “इसराईल ने न तो मोआबियों से और न अम्मोनियों से ज़मीन छीनी। 16 हक़ीक़त यह है कि जब हमारी क़ौम मिसर से निकली तो वह रेगिस्तान में से

गुज़रकर बहरे-कुलजुम और वहाँ से होकर कादिस पहुँच गईं। 17 कादिस से उन्होंने अदोम के बादशाह के पास कासिद भेजकर गुज़ारिश की, 'हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें।' लेकिन उसने इनकार किया। फिर इसराईलियों ने मोआब के बादशाह से दरखास्त की, लेकिन उसने भी अपने मुल्क में से गुज़रने की इजाज़त न दी। इस पर हमारी क्रौम कुछ देर के लिए कादिस में रही। 18 आखिरकार वह रेगिस्तान में वापस जाकर अदोम और मोआब के जुनूब में चलते चलते मोआब के मशरिकी किनारे पर पहुँची, वहाँ जहाँ दरियाए-अरनोन उस की सरहद है। लेकिन वह मोआब के इलाके में दाखिल न हुए बल्कि दरिया के मशरिक में खैमाज़न हुए। 19 वहाँ से इसराईलियों ने हसबोन के रहनेवाले अमोरी बादशाह सीहोन को पैगाम भिजवाया, 'हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें ताकि हम अपने मुल्क में दाखिल हो सकें।' 20 लेकिन सीहोन को शक हुआ। उसे यक्रीन नहीं था कि वह मुल्क में से गुज़रकर आगे बढ़ेंगे। उसने न सिर्फ़ इनकार किया बल्कि अपने फ़ौजियों को जमा करके यहज़ शहर में खैमाज़न हुआ और इसराईलियों के साथ लड़ने लगा।

21 लेकिन रब इसराईल के खुदा ने सीहोन और उसके तमाम फ़ौजियों को इसराईल के हवाले कर दिया। उन्होंने उन्हें शिकस्त देकर अमोरियों के पूरे मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया। 22 यह तमाम इलाका जुनूब में दरियाए-अरनोन से लेकर शिमाल में दरियाए-यब्बोक तक और मशरिक के रेगिस्तान से लेकर मगरिब में दरियाए-यरदन तक हमारे कब्ज़े में आ गया। 23 देखें, रब इसराईल के खुदा ने अपनी क्रौम के आगे आगे अमोरियों को निकाल दिया है। तो फिर आपका इस मुल्क पर कब्ज़ा करने का क्या हक़ है? 24 आप भी समझते हैं कि जिसे आपके देवता क़मोस ने आपके आगे से निकाल दिया है उसके मुल्क पर कब्ज़ा करने का आपका हक़ है। इसी तरह जिसे रब हमारे खुदा ने हमारे आगे आगे निकाल दिया है उसके मुल्क पर कब्ज़ा करने का हक़ हमारा है। 25 क्या आप अपने आपको मोआबी बादशाह बलक बिन सफ़ोर से बेहतर समझते हैं? उसने तो इसराईल से लड़ने बल्कि झगड़ने तक की हिम्मत न की। 26 अब इसराईली 300 साल से हसबोन और अरोईर के शहरों में उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत आबाद हैं और इसी तरह दरियाए-अरनोन के किनारे पर के शहरों में। आपने इस दौरान इन जगहों पर कब्ज़ा क्यों न किया? 27 चुनाँचे मैंने आपसे ग़लत सुलूक नहीं किया बल्कि आप ही मेरे साथ ग़लत सुलूक कर रहे हैं। क्योंकि मुझसे जंग छेड़ना ग़लत है। रब जो मुंसिफ़ है वही आज इसराईल और अम्मोन के झगड़े का फ़ैसला करे!"

28 लेकिन अम्मोनी बादशाह ने इफताह के पैगाम पर ध्यान न दिया।

### इफताह की फतह

29 फिर रब का रूह इफताह पर नाज़िल हुआ, और वह जिलियाद और मनस्सी में से गुज़र गया, फिर जिलियाद के मिसफ़ाह के पास वापस आया। वहाँ से वह अपनी फ़ौज़ लेकर अम्मोनियों से लड़ने निकला।

30 पहले उसने रब के सामने क्रसम खाई, “अगर तू मुझे अम्मोनियों पर फ़तह दे 31 और मैं सहीह-सलामत लौटूँ तो जो कुछ भी पहले मेरे घर के दरवाज़े से निकलकर मुझसे मिले वह तेरे लिए मखसूस किया जाएगा। मैं उसे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करूँगा।”

32 फिर इफताह अम्मोनियों से लड़ने गया, और रब ने उसे उन पर फ़तह दी। 33 इफताह ने अरोईर में दुश्मन को शिकस्त दी और इसी तरह मिन्नीत और अबील-करामीम तक मज़ीद बीस शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। यों इसराईल ने अम्मोन को ज़ेर कर दिया।

### इफताह की वापसी

34 इसके बाद इफताह मिसफ़ाह वापस चला गया। वह अभी घर के करीब था कि उस की इकलौती बेटी दफ़ बजाती और नाचती हुई घर से निकल आई। इफताह का कोई और बेटा या बेटी नहीं थी। 35 अपनी बेटी को देखकर वह रंज के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख उठा, “हाय मेरी बेटी! तूने मुझे खाक में दबाकर तबाह कर दिया है, क्योंकि मैंने रब के सामने ऐसी क्रसम खाई है जो बदली नहीं जा सकती।”

36 बेटी ने कहा, “अब्बू, आपने क्रसम खाकर रब से वादा किया है, इसलिए लाज़िम है कि मेरे साथ वह कुछ करें जिसकी क्रसम आपने खाई है। आखिर उसी ने आपको दुश्मन से बदला लेने की कामयाबी बख़्श दी है। 37 लेकिन मेरी एक गुज़ारिश है। मुझे दो माह की मोहलत दें ताकि मैं अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में जाकर अपनी ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम करूँ।”

38 इफताह ने इज़ाज़त दी। फिर बेटी दो माह के लिए अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में चली गई और अपनी ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम किया। 39 फिर वह अपने बाप के पास वापस आई, और उसने अपनी क्रसम का वादा पूरा किया। बेटी ग़ैरशादीशुदा थी।

उस वक़्त से इसराईल में दस्तूर रायज है 40 कि इसराईल की जवान औरतें सालाना चार दिन के लिए अपने घरों से निकलकर इफ़ताह की बेटी की याद में जशन मनाती हैं।

## 12

इफ़राईम का क़बीला इफ़ताह पर हमला करता है

1 अम्मोनियों पर फ़तह के बाद इफ़राईम के क़बीले के आदमी जमा हुए और दरियाए-यरदन को पार करके इफ़ताह के पास आए जो सफ़ोन में था। उन्होंने शिकायत की, “आप क्यों हमें बुलाए बग़ैर अम्मोनियों से लड़ने गए? अब हम आपको आपके घर समेत जला देंगे!”

2 इफ़ताह ने एतराज़ किया, “जब मेरी और मेरी क़ौम का अम्मोनियों के साथ सख़्त झगड़ा छिड़ गया तो मैंने आपको बुलाया, लेकिन आपने मुझे उनके हाथ से न बचाया। 3 जब मैंने देखा कि आप मदद नहीं करेंगे तो अपनी जान ख़तरे में डालकर आपके बग़ैर ही अम्मोनियों से लड़ने गया। और अब मैंने उन पर फ़तह बख़्शी। अब मुझे बताएँ कि आप क्यों मेरे पास आकर मुझ पर हमला करना चाहते हैं?”

4 इफ़राईमियों ने जवाब दिया, “तुम जो जिलियाद में रहते हो बस इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों से निकले हुए भगोड़े हो।” तब इफ़ताह ने जिलियाद के मर्दों को जमा किया और इफ़राईमियों से लड़कर उन्हें शिकस्त दी।

5 फिर जिलियादियों ने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मक़ामों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब कोई गुज़रना चाहता तो वह पूछते, “क्या आप इफ़राईमी हैं?” अगर वह इनकार करता 6 तो जिलियाद के मर्द कहते, “तो फिर लफ़ज़ ‘सिब्बोलेत’ \* बोलें।” अगर वह इफ़राईमी होता तो इसके बजाए “सिब्बोलेत” कहता। फिर जिलियादी उसे पकड़कर वहीं मार डालते। उस वक़्त कुल 42,000 इफ़राईमी हलाक हुए।

7 इफ़ताह ने छः साल इसराईल की राहनुमाई की। जब फ़ौत हुआ तो उसे जिलियाद के किसी शहर में दफ़नाया गया।

इबज़ान, ऐलोन और अबदोन

\* 12:6 यानी नदी।

8 इफ़ताह के बाद इबज़ान इसराईल का काज़ी बना। वह बैत-लहम में आबाद था, 9 और उसके 30 बेटे और 30 बेटियाँ थीं। उस की तमाम बेटियाँ शादीशुदा थीं और इस वजह से बाप के घर में नहीं रहती थीं। लेकिन उसे 30 बेटों के लिए बीवियाँ मिल गई थीं, और सब उसके घर में रहते थे। इबज़ान ने सात साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 10 फिर वह इंतक़ाल कर गया और बैत-लहम में दफ़नाया गया।

11 उसके बाद ऐलोन काज़ी बना। वह जबूलून के क़बीले से था और 10 साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई करता रहा। 12 जब वह कूच कर गया तो उसे जबूलून के ऐयालोन में दफ़न किया गया।

13 फिर अबदोन बिन हिल्लेल काज़ी बना। वह शहर फिरआतोन का था। 14 उसके 40 बेटे और 30 पोते थे जो 70 गधों पर सफ़र किया करते थे। अबदोन ने आठ साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 15 फिर वह भी जान-बहक हो गया, और उसे अमालीकियों के पहाड़ी इलाके के शहर फिरआतोन में दफ़नाया गया, जो उस वक़्त इफ़राईम का हिस्सा था।

## 13

### समसून की पैदाइश की पेशगोई

1 फिर इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगती। इसलिए उसने उन्हें फिलिस्तियों के हवाले कर दिया जो उन्हें 40 साल दबाते रहे। 2 उस वक़्त एक आदमी सुरआ शहर में रहता था जिसका नाम मनोहा था। दान के क़बीले का यह आदमी बेओलाद था, क्योंकि उस की बीवी बाँझ थी।

3 एक दिन रब का फ़रिश्ता मनोहा की बीवी पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “गो तुझसे बच्चे पैदा नहीं हो सकते, अब तू हामिला होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। 4 मैं या कोई और नशा-आवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक चीज़ खाना। 5 क्योंकि जो बेटा पैदा होगा वह पैदाइश से ही अल्लाह के लिए मख़सूस होगा। लाज़िम है कि उसके बाल कभी न काटे जाएँ। यही बच्चा इसराईल को फिलिस्तियों से बचाने लगेगा।”

6 बीवी अपने शौहर मनोहा के पास गई और उसे सब कुछ बताया, “अल्लाह का एक बंदा मेरे पास आया। वह अल्लाह का फ़रिश्ता लग रहा था, यहाँ तक कि मैं सख़्त घबरा गई। मैंने उससे न पूछा कि वह कहाँ से है, और ख़ुद उसने मुझे



अपना नाम न बताया। <sup>7</sup> लेकिन उसने मुझे बताया, 'तू हामिला होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। अब मैं या कोई और नशा-आवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक चीज़ खाना। क्योंकि बेटा पैदाइश से ही मौत तक अल्लाह के लिए मखसूस होगा।'।”

<sup>8</sup> यह सुनकर मनोहा ने रब से दुआ की, “ऐ रब, बराहे-करम मर्दे-खुदा को दुबारा हमारे पास भेज ताकि वह हमें सिखाए कि हम उस बेटे के साथ क्या करें जो पैदा होनेवाला है।” <sup>9</sup> अल्लाह ने उस की सुनी और अपने फ़रिश्ते को दुबारा उस की बीवी के पास भेज दिया। उस वक़्त वह शौहर के बग़ैर खेत में थी। <sup>10</sup> फ़रिश्ते को देखकर वह जल्दी से मनोहा के पास आई और उसे इतला दी, “जो आदमी पिछले दिनों में मेरे पास आया वह दुबारा मुझ पर जाहिर हुआ है!”

<sup>11</sup> मनोहा उठकर अपनी बीवी के पीछे पीछे फ़रिश्ते के पास आया। उसने पूछा, “क्या आप वही आदमी हैं जिसने पिछले दिनों में मेरी बीवी से बात की थी?” फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “जी, मैं ही था।” <sup>12</sup> फिर मनोहा ने सवाल किया, “जब आपकी पेशगोई पूरी हो जाएगी तो हमें बेटे के तर्जे-ज़िंदगी और सुलूक के सिलसिले में किन किन बातों का खयाल करना है?”

<sup>13</sup> रब के फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि तेरी बीवी उन तमाम चीज़ों से परहेज़ करे जिनका ज़िक्र मैंने किया। <sup>14</sup> वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए। न वह मै, न कोई और नशा-आवर चीज़ पिए। नापाक चीज़ें खाना भी मना है। वह मेरी हर हिदायत पर अमल करे।”

<sup>15</sup> मनोहा ने रब के फ़रिश्ते से गुज़ारिश की, “मेहरबानी करके थोड़ी देर हमारे पास ठहरें ताकि हम बकरी का बच्चा ज़बह करके आपके लिए खाना तैयार कर सकें।” <sup>16</sup> अब तक मनोहा ने यह बात नहीं पहचानी थी कि मेहमान असल में रब का फ़रिश्ता है। फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “खाह तू मुझे रोके भी मैं कुछ नहीं खाऊंगा। लेकिन अगर तू कुछ करना चाहे तो बकरी का बच्चा रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश कर।”

<sup>17</sup> मनोहा ने उससे पूछा, “आपका क्या नाम है? क्योंकि जब आपकी यह बातें पूरी हो जाएँगी तो हम आपकी इज़ज़त करना चाहेंगे।” <sup>18</sup> फ़रिश्ते ने सवाल किया, “तू मेरा नाम क्यों जानना चाहता है? वह तो तेरी समझ से बाहर है।” <sup>19</sup> फिर मनोहा ने एक बड़े पत्थर पर रब को बकरी का बच्चा और गल्ला की नज़र पेश की। तब रब ने मनोहा और उस की बीवी के देखते देखते एक हैरतअंगेज़ काम किया। <sup>20</sup> जब आग के शोले आसमान की तरफ़ बुलंद हुए तो रब का फ़रिश्ता

शोले में से ऊपर चढ़कर ओझल हो गया। मनोहा और उस की बीवी मुँह के बल गिर गए।

21 जब रब का फ़रिश्ता दुबारा मनोहा और उस की बीवी पर ज़ाहिर न हुआ तो मनोहा को समझ आई कि रब का फ़रिश्ता ही था। 22 वह पुकार उठा, “हाय, हम मर जाएंगे, क्योंकि हमने अल्लाह को देखा है!” 23 लेकिन उस की बीवी ने एतराज़ किया, “अगर रब हमें मार डालना चाहता तो वह हमारी कुरबानी क़बूल न करता। फिर न वह हम पर यह सब कुछ ज़ाहिर करता, न हमें ऐसी बातें बताता।”

24 कुछ देर के बाद मनोहा के हॉ बेटा पैदा हुआ। बीवी ने उसका नाम समसून रखा। बच्चा बड़ा होता गया, और रब ने उसे बरकत दी। 25 अल्लाह का रूह पहली बार महने-दान में जो सुरआ और इस्ताल के दरमियान है उस पर नाज़िल हुआ।

## 14

### समसून की फ़िलिस्ती औरत से शादी

1 एक दिन समसून तिमनत में फ़िलिस्तियों के पास ठहरा हुआ था। वहाँ उसने एक फ़िलिस्ती औरत देखी जो उसे पसंद आई। 2 अपने घर लौटकर उसने अपने वालिदैन को बताया, “मुझे तिमनत की एक फ़िलिस्ती औरत पसंद आई है। उसके साथ मेरा रिश्ता बाँधने की कोशिश करें।” 3 उसके वालिदैन ने जवाब दिया, “क्या आपके रिश्तेदारों और क़ौम में कोई काबिले-क़बूल औरत नहीं है? आपको नामखतून और बेदीन फ़िलिस्तियों के पास जाकर उनमें से कोई औरत ढूँडने की क्या ज़रूरत थी?” लेकिन समसून बज़िद रहा, “उसी के साथ मेरी शादी कराएँ! वही मुझे ठीक लगती है।”

4 उसके माँ-बाप को मालूम नहीं था कि यह सब कुछ रब की तरफ़ से है जो फ़िलिस्तियों से लड़ने का मौक़ा तलाश कर रहा था। क्योंकि उस वक़्त फ़िलिस्ती इसराईल पर हुकूमत कर रहे थे।

5 चुनौचे समसून अपने माँ-बाप समेत तिमनत के लिए रवाना हुआ। जब वह तिमनत के अंगूर के बाग़ों के करीब पहुँचे तो समसून अपने माँ-बाप से अलग हो गया। अचानक एक जवान शेरबबर दहाड़ता हुआ उस पर टूट पड़ा। 6 तब अल्लाह का रूह इतने ज़ोर से समसून पर नाज़िल हुआ कि उसने अपने हाथों से शेर को यों फाड़ डाला, जिस तरह आम आदमी बकरी के छोटे बच्चे को फाड़ डालता है।

लेकिन उसने अपने वालिदैन को इसके बारे में कुछ न बताया। 7 आगे निकलकर वह तिमनत पहुँच गया। मज़कूरा फिलिस्ती औरत से बात हुई और वह उसे ठीक लगी।

8 कुछ देर के बाद वह शादी करने के लिए दुबारा तिमनत गए। शहर पहुँचने से पहले समसून रास्ते से हटकर शेरबबर की लाश को देखने गया। वहाँ क्या देखता है कि शहद की मक्खियों ने शेर के पिंजर में अपना छत्ता बना लिया है। 9 समसून ने उसमें हाथ डालकर शहद को निकाल लिया और उसे खाते हुए चला। जब वह अपने माँ-बाप के पास पहुँचा तो उसने उन्हें भी कुछ दिया, मगर यह न बताया कि कहाँ से मिल गया है।

10 तिमनत पहुँचकर समसून का बाप दुलहन के खानदान से मिला जबकि समसून ने दूल्हे की हैसियत से ऐसी ज़ियाफ़त की जिस तरह उस ज़माने में दस्त्र था।

### फिलिस्ती समसून को धोका देते हैं

11 जब दुलहन के घरवालों को पता चला कि समसून तिमनत पहुँच गया है तो उन्होंने उसके पास 30 जवान आदमी भेज दिए कि उसके साथ खुशी मनाएँ। 12 समसून ने उनसे कहा, “मैं आपसे पहेली पूछता हूँ। अगर आप ज़ियाफ़त के सात दिनों के दौरान इसका हल बता सकें तो मैं आपको कतान के 30 क्रीमती कुरते और 30 शानदार सूट दे दूँगा। 13 लेकिन अगर आप मुझे इसका सहीह मतलब न बता सकें तो आपको मुझे 30 क्रीमती कुरते और 30 शानदार सूट देने पड़ेंगे।” उन्होंने जवाब दिया, “अपनी पहेली सुनाएँ।”

14 समसून ने कहा, “खानेवाले में से खाना निकला और जोरावर में से मिठास।”

तीन दिन गुज़र गए। जवान पहेली का मतलब न बता सके। 15 चौथे दिन उन्होंने दुलहन के पास जाकर उसे धमकी दी, “अपने शौहर को हमें पहेली का मतलब बताने पर उकसाओ, वरना हम तुम्हें तुम्हारे खानदान समेत जला देंगे। क्या तुम लोगों ने हमें सिर्फ़ इसलिए दावत दी कि हमें लूट लो?”

16 दुलहन समसून के पास गई और आँसू बहा बहाकर कहने लगी, “तू मुझे प्यार नहीं करता! हकीकत में तू मुझसे नफ़रत करता है। तूने मेरी क्रीम के लोगों से पहेली पूछी है लेकिन मुझे इसका मतलब नहीं बताया।” समसून ने जवाब दिया, “मैंने अपने माँ-बाप को भी इसका मतलब नहीं बताया तो तुझे क्यों बताऊँ?”

17 ज़ियाफ़त के पूरे हफ़ते के दौरान दुलहन उसके सामने रोती रही।

सातवें दिन समसून दुलहन की इल्लिजाओं से इतना तंग आ गया कि उसने उसे पहेली का हल बता दिया। तब दुलहन ने फुरती से सब कुछ फिलिस्तिथियों को सुना दिया। 18 सूरज के गुरूब होने से पहले पहले शहर के मर्दों ने समसून को पहेली का मतलब बताया, “क्या कोई चीज़ शहद से ज़्यादा मीठी और शेरबबर से ज़्यादा जोरावर होती है?” समसून ने यह सुनकर कहा, “आपने मेरी जवान गाय लेकर हल चलाया है, वरना आप कभी भी पहेली का हल न निकाल सकते।” 19 फिर रब का रूह उस पर नाज़िल हुआ। उसने अस्कलून शहर में जाकर 30 फिलिस्तिथियों को मार डाला और उनके लिबास लेकर उन आदमियों को दे दिए जिन्होंने उसे पहेली का मतलब बता दिया था।

इसके बाद वह बड़े गुस्से में अपने माँ-बाप के घर चला गया। 20 लेकिन उस की बीवी की शादी समसून के शहबाले से कराई गई जो 30 जवान फिलिस्तिथियों में से एक था।

## 15

समसून फिलिस्तिथियों से बदला लेता है

1 कुछ दिन गुज़र गए। जब गंदूम की कटाई होने लगी तो समसून बकरी का बच्चा अपने साथ लेकर अपनी बीवी से मिलने गया। सुसर के घर पहुँचकर उसने बीवी के कमरे में जाने की दरखास्त की। लेकिन बाप ने इनकार किया। 2 उसने कहा, “यह नहीं हो सकता! मैंने बेटी की शादी आपके शहबाले से करा दी है। असल में मुझे यकीन हो गया था कि अब आप उससे सख्त नफ़रत करते हैं। लेकिन कोई बात नहीं। उस की छोटी बहन से शादी कर लें। वह ज़्यादा ख़ूबसूरत है।”

3 समसून बोला, “इस दफ़ा मैं फिलिस्तिथियों से ख़ूब बदला लूँगा, और कोई नहीं कह सकेगा कि मैं हक़ पर नहीं हूँ।” 4 वहाँ से निकलकर उसने 300 लोमड़ियों को पकड़ लिया। दो दो की दुमों को बाँधकर उसने हर जोड़े की दुमों के साथ मशाल लगा दी 5 और फिर मशालों को जलाकर लोमड़ियों को फिलिस्तिथियों के अनाज के खेतों में भगा दिया। खेतों में पड़े पूरे उस अनाज समेत भस्म हुए जो अब तक काटा नहीं गया था। अंगूर और जैतून के बाग भी तबाह हो गए।

6 फिलिस्तिथियों ने दरियाफ़्त किया कि यह किसका काम है। पता चला कि समसून ने यह सब कुछ किया है, और कि वजह यह है कि तिमनत में उसके सुसर ने उस की बीवी को उससे छीनकर उसके शहबाले को दे दिया है। यह सुनकर

फिलिस्ती तिमनत गए और समसून के सुसर को उस की बेटी समेत पकड़कर जला दिया। 7 तब समसून ने उनसे कहा, “यह तुमने क्या किया है! जब तक मैंने पूरा बदला न लिया मैं नहीं स्कूंगा।” 8 वह इतने जोर से उन पर टूट पड़ा कि बेशमार फिलिस्ती हलाक हुए। फिर वह उस जगह से उतरकर ऐताम की चटान के गार में रहने लगा।

### लही में समसून फिलिस्तियों से लड़ता है

9 जवाब में फिलिस्ती फ्रौज यहदाह के कबायली इलाके में दाखिल हुई। वहाँ वह लही शहर के पास खैमाज़न हुए। 10 यहदाह के बाशिंदों ने पूछा, “क्या वजह है कि आप हमसे लड़ने आए हैं?” फिलिस्तियों ने जवाब दिया, “हम समसून को पकड़ने आए हैं ताकि उसके साथ वह कुछ करें जो उसने हमारे साथ किया है।”

11 तब यहदाह के 3,000 मर्द ऐताम पहाड़ के गार के पास आए और समसून से कहा, “यह आपने हमारे साथ क्या किया? आपको तो पता है कि फिलिस्ती हम पर हुकूमत करते हैं।” समसून ने जवाब दिया, “मैंने उनके साथ सिर्फ वह कुछ किया जो उन्होंने मेरे साथ किया था।”

12 यहदाह के मर्द बोले, “हम आपको बाँधकर फिलिस्तियों के हवाले करने आए हैं।” समसून ने कहा, “ठीक है, लेकिन क्रसम खाएँ कि आप खुद मुझे क़त्ल नहीं करेंगे।”

13 उन्होंने जवाब दिया, “हम आपको हरगिज़ क़त्ल नहीं करेंगे बल्कि आपको सिर्फ बाँधकर उनके हवाले कर देंगे।” चुनाँचे वह उसे दो ताज़ा ताज़ा रस्सों से बाँधकर फिलिस्तियों के पास ले गए।

14 समसून अभी लही से दूर था कि फिलिस्ती नारे लगाते हुए उस की तरफ दौड़े आए। तब रब का रूह बड़े जोर से उस पर नाज़िल हुआ। उसके बाजूओं से बँधे हुए रस्से सन के जले हुए धागे जैसे कमज़ोर हो गए, और वह पिघलकर हाथों से गिर गए। 15 कहीं से गधे का ताज़ा जबड़ा पकड़कर उसने उसके ज़रीए हज़ार अफ़राद को मार डाला।

16 उस वक़्त उसने नारा लगाया, “गधे के जबड़े से मैंने उनके ढेर लगाए हैं! गधे के जबड़े से मैंने हज़ार मर्दों को मार डाला है!” 17 इसके बाद उसने गधे का यह जबड़ा फेंक दिया। उस जगह का नाम रामत-लही यानी जबड़ा पहाड़ी पड़ गया।

18 समसून को वहाँ बड़ी प्यास लगी। उसने रब को पुकारकर कहा, “तू ही ने अपने खादिम के हाथ से इसराईल को यह बड़ी नजात दिलाई है। लेकिन अब मैं प्यास से मरकर नामखतून दुश्मन के हाथ में आ जाऊँगा।” 19 तब अल्लाह ने लही में ज़मीन को छेदा, और गढे से पानी फूट निकला। समसून उसका पानी पीकर दुबारा ताज़ादम हो गया। यों उस चश्मे का नाम ऐन-हक्क्रोरे यानी पुकारनेवाले का चश्मा पड़ गया। आज भी वह लही में मौजूद है।

20 फिलिस्तिनों के दौर में समसून 20 साल तक इसराईल का काजी रहा।

## 16

समसून गज़्ज़ा का दरवाज़ा उठा ले जाता है

1 एक दिन समसून फिलिस्ती शहर गज़्ज़ा में आया। वहाँ वह एक कसबी को देखकर उसके घर में दाखिल हुआ। 2 जब शहर के बाशिंदों को इतला मिली कि समसून शहर में है तो उन्होंने कसबी के घर को घेर लिया। साथ साथ वह रात के वक़्त शहर के दरवाज़े पर ताक में रहे। फैसला यह हुआ, “रात के वक़्त हम कुछ नहीं करेंगे, जब पौ फटेगी तब उसे मार डालेंगे।”

3 समसून अब तक कसबी के घर में सो रहा था। लेकिन आधी रात को वह उठकर शहर के दरवाज़े के पास गया और दोनों किवाड़ों को कुंडे और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं समेत उखाड़कर अपने कंधों पर रख लिया। यों चलते चलते वह सब कुछ उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हबस्न के मुकाबिल है।

समसून और दलीला

4 कुछ देर के बाद समसून एक औरत की मुहब्बत में गिरिफ़्तार हो गया जो वादीए-सूरिक्र में रहती थी। उसका नाम दलीला था। 5 यह सुनकर फिलिस्ती सरदार उसके पास आए और कहने लगे, “समसून को उकसाएँ कि वह आपको अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताए। हम जानना चाहते हैं कि हम किस तरह उस पर गालिब आकर उसे यों बाँध सकें कि वह हमारे कब्ज़े में रहे। अगर आप यह मालूम कर सकें तो हममें से हर एक आपको चाँदी के 1,100 सिक्के देगा।”

6 चुनाँचे दलीला ने समसून से सवाल किया, “मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताएँ। क्या आपको किसी ऐसी चीज़ से बाँधा जा सकता है जिसे आप तोड़ नहीं सकते?” 7 समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे जानवरों की सात ताज़ा नसों से बाँधा जाए तो फिर मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 8 फिलिस्ती

सरदारों ने दलीला को सात ताजा नसें मुहैया कर दीं, और उसने समसून को उनसे बाँध लिया। <sup>9</sup> कुछ फिलिस्ती आदमी साथवाले कमरे में छुप गए। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” यह सुनकर समसून ने नसों को यों तोड़ दिया जिस तरह डोरी टूट जाती है जब आग में से गुजरती है। चुनौचे उस की ताकत का पोल न खुला।

<sup>10</sup> दलीला का मुँह लटक गया। “आपने झूट बोलकर मुझे बेवुकूफ बनाया है। अब आँ, मेहरबानी करके मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।” <sup>11</sup> समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे गैरइस्तेमालशुदा रस्सों से बाँधा जाए तो फिर ही मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” <sup>12</sup> दलीला ने नए रस्से लेकर उसे उनसे बाँध लिया। इस मरतबा भी फिलिस्ती साथवाले कमरे में छुप गए थे। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” लेकिन इस बार भी समसून ने रस्सों को यों तोड़ लिया जिस तरह आम आदमी डोरी को तोड़ लेता है।

<sup>13</sup> दलीला ने शिकायत की, “आप बार बार झूट बोलकर मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं। अब मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।” समसून ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि आप मेरी सात जुल्फों को खड़ी के ताने के साथ बुनें। फिर ही आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” <sup>14</sup> जब समसून सो रहा था तो दलीला ने ऐसा ही किया। उस की सात जुल्फों को ताने के साथ बुनकर उसने उसे शटल के ज़रीए खड़ी के साथ लगाया। फिर वह चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” समसून जाग उठा और अपने बालों को शटल समेत खड़ी से निकाल लिया।

<sup>15</sup> यह देखकर दलीला ने मुँह फूलाकर मलामत की, “आप किस तरह दावा कर सकते हैं कि मुझसे मुहब्बत रखते हैं? अब आपने तीन मरतबा मेरा मज़ाक उड़ाकर मुझे अपनी बड़ी ताकत का भेद नहीं बताया।” <sup>16</sup> रोज़ बरोज़ वह अपनी बातों से उस की नाक में दम करती रही। आखिरकार समसून इतना तंग आ गया कि उसका जीना दूभर हो गया। <sup>17</sup> फिर उसने उसे खुलकर बात बताई, “मैं पैदाइश ही से अल्लाह के लिए मख़सूस हूँ, इसलिए मेरे बालों को कभी नहीं काटा गया। अगर सर को मुँडवाया जाए तो मेरी ताकत जाती रहेगी और मैं हर दूसरे आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।”

18 दलीला ने जान लिया कि अब समसून ने मुझे पूरी हक्रीकत बताई है। उसने फिलिस्ती सरदारों को इतला दी, “आओ, क्योंकि इस मरतबा उसने मुझे अपने दिल की हर बात बताई है।” यह सुनकर वह मुकर्ररा चाँदी अपने साथ लेकर दलीला के पास आए।

19 दलीला ने समसून का सर अपनी गोद में रखकर उसे सुला दिया। फिर उसने एक आदमी को बुलाकर समसून की सात जुल्फों को मुँडवाया। यों वह उसे पस्त करने लगी, और उस की ताकत जाती रही। 20 फिर वह चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए है!” समसून जाग उठा और सोचा, “मैं पहले की तरह अब भी अपने आपको बचाकर बंधन को तोड़ दूँगा।” अफसोस, उसे मालूम नहीं था कि रब ने उसे छोड़ दिया है। 21 फिलिस्तियों ने उसे पकड़कर उस की आँखें निकाल दीं। फिर वह उसे गज़्ज़ा ले गए जहाँ उसे पीतल की जंजीरों से बाँधा गया। वहाँ वह कैदखाने की चक्की पीसा करता था।

22 लेकिन होते होते उसके बाल दुबारा बढ़ने लगे।

### समसून का आखिरी इंतकाम

23 एक दिन फिलिस्ती सरदार बड़ा जशन मनाने के लिए जमा हुए। उन्होंने अपने देवता दजून को जानवरों की बहुत-सी कुरबानियाँ पेश करके अपनी फ़तह की खुशी मनाई। वह बोले, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन समसून को हमारे हवाले कर दिया है।” 24 समसून को देखकर अवाम ने दजून की तमजीद करके कहा, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन को हमारे हवाले कर दिया है! जिसने हमारे मुल्क को तबाह किया और हममें से इतने लोगों को मार डाला वह अब हमारे काबू में आ गया है!” 25 इस क्रिस्म की बातें करते करते उनकी खुशी की इंतहा न रही। तब वह चिल्लाने लगे, “समसून को बुलाओ ताकि वह हमारे दिलों को बहलाए।”

चुनाँचे उसे उनकी तफ़रीह के लिए जेल से लाया गया और दो सतूनों के दरमियान खड़ा कर दिया गया। 26 समसून उस लडके से मुखातिब हुआ जो उसका हाथ पकड़कर उस की राहनुमाई कर रहा था, “मुझे छत को उठानेवाले सतूनों के पास ले जाओ ताकि मैं उनका सहारा लूँ।” 27 इमारत मर्दों और औरतों से भरी थी। फिलिस्ती सरदार भी सब आए हुए थे। सिर्फ छत पर समसून का तमाशा देखनेवाले तकरीबन 3,000 अफ़राद थे।

28 फिर समसून ने दुआ की, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, मुझे याद कर। बस एक दफ़ा और मुझे पहले की तरह कुव्वत अता फ़रमा ताकि मैं एक ही वार से



फिलिस्तिनों से अपनी आँखों का बदला ले सकूँ।” 29 यह कहकर समसून ने उन दो मरकज़ी सतूनों को पकड़ लिया जिन पर छत का पूरा वज़न था। उनके दरमियान खड़े होकर उसने पूरी ताकत से ज़ोर लगाया 30 और दुआ की, “मुझे फिलिस्तिनों के साथ मरने दे!” अचानक सतून हिल गए और छत धड़ाम से फिलिस्तिनों के तमाम सरदारों और बाक़ी लोगों पर गिर गई। इस तरह समसून ने पहले की निसबत मरते वक़्त कहीं ज़्यादा फिलिस्तिनों को मार डाला।

31 समसून के भाई और बाक़ी घरवाले आए और उस की लाश को उठाकर उसके बाप मनोहा की क़ब्र के पास ले गए। वहाँ यानी सुरआ और इस्ताल के दरमियान उन्होंने उसे दफनाया। समसून 20 साल इसराईल का काज़ी रहा।

## 17

### मीकाह का बुत

1 इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में एक आदमी रहता था जिसका नाम मीकाह था। 2 एक दिन उसने अपनी माँ से बात की, “आपके चाँदी के 1,100 सिक्के चोरी हो गए थे, ना? उस वक़्त आपने मेरे सामने ही चोर पर लानत भेजी थी। अब देखें, वह कैसे मेरे पास है। मैं ही चोर हूँ।” यह सुनकर माँ ने जवाब दिया, “मेरे बेटे, रब तुझे बरकत दे!” 3 मीकाह ने उसे तमाम पैसे वापस कर दिए, और माँ ने एलान किया, “अब से यह चाँदी रब के लिए मख़सूस हो! मैं आपके लिए तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाकर चाँदी आपको वापस कर देती हूँ।”

4 चुनौचे जब बेटे ने पैसे वापस कर दिए तो माँ ने उसके 200 सिक्के सुनार के पास ले जाकर लकड़ी का तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाया। मीकाह ने यह बुत अपने घर में खड़ा किया, 5 क्योंकि उसका अपना मक़दिस था। उसने मज़ीद बुत और एक अफ़ोद \* भी बनवाया और फिर एक बेटे को अपना इमाम बना लिया। 6 उस ज़माने में इसराईल का कोई बादशाह नहीं था बल्कि हर कोई वही कुछ करता जो उसे दुस्त लगता था।

7 उन दिनों में लावी के क़बीले का एक जवान आदमी यहूदाह के क़बीले के शहर बैत-लहम में आबाद था। 8 अब वह शहर को छोड़कर रिहाइश की कोई और जगह तलाश करने लगा। इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में से सफ़र करते करते वह

\* 17:5 आम तौर पर इब्रानी में अफ़ोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुर्ज़ 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

मीकाह के घर पहुँच गया। 9 मीकाह ने पूछा, “आप कहाँ से आए हैं?” जवान ने जवाब दिया, “मैं लावी हूँ। मैं यहदाह के शहर बैत-लहम का रहनेवाला हूँ लेकिन रिहाइश की किसी और जगह की तलाश में हूँ।”

10 मीकाह बोला, “यहाँ मेरे पास अपना घर बनाकर मेरे बाप और इमाम बनें। तब आपको साल में चाँदी के दस सिक्के और ज़रूरत के मुताबिक कपड़े और खुराक मिलेगी।”

11 लावी मुतफ़िक़ हुआ। वह वहाँ आबाद हुआ, और मीकाह ने उसके साथ बेटों का-सा सुलूक किया। 12 उसने उसे इमाम मुकर्रर करके सोचा, 13 “अब रब मुझ पर मेहरबानी करेगा, क्योंकि लावी मेरा इमाम बन गया है।”

## 18

दान का कबीला ज़मीन की तलाश करता है

1 उन दिनों में इसराईल का बादशाह नहीं था। और अब तक दान के कबीले को अपना कोई कबायली इलाका नहीं मिला था, इसलिए उसके लोग कहीं आबाद होने की तलाश में रहे। 2 उन्होंने अपने खानदानों में से सुरआ और इस्ताल के पाँच तजरबाकार फ़ौजियों को चुनकर उन्हें मुल्क की तफ़तीश करने के लिए भेज दिया। यह मर्द इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में से गुज़रकर मीकाह के घर के पास पहुँच गए। जब वह वहाँ रात के लिए ठहरे हुए थे 3 तो उन्होंने देखा कि जवान लावी बैत-लहम की बोली बोलता है। उसके पास जाकर उन्होंने पूछा, “कौन आपको यहाँ लाया है? आप यहाँ क्या करते हैं? और आपका इस घर में रहने का क्या मक़सद है?” 4 लावी ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, “मीकाह ने मुझे नौकरी देकर अपना इमाम बना लिया है।” 5 फिर उन्होंने उससे गुज़ारिश की, “अल्लाह से दरियाफ़्त करें कि क्या हमारे सफ़र का मक़सद पूरा हो जाएगा या नहीं?” 6 लावी ने उन्हें तसल्ली दी, “सलामती से आगे बढ़ें। आपके सफ़र का मक़सद रब को क़बूल है, और वह आपके साथ है।”

7 तब यह पाँच आदमी आगे निकले और सफ़र करते करते लैस पहुँच गए। उन्होंने देखा कि वहाँ के लोग सैदानियों की तरह पुरसुकून और बेफ़िक़र ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। कोई नहीं था जो उन्हें दबाता या उन पर ज़ुल्म करता। यह भी मालूम हुआ कि अगर उन पर हमला किया जाए तो उनका इतहादी शहर सैदा उनसे इतनी दूर है कि उनकी मदद नहीं कर सकेगा, और करीब कोई इतहादी नहीं है जो उनका

साथ दे। 8 वह पाँच जासूस सुरआ और इस्ताल वापस चले गए। जब वहाँ पहुँचे तो दूसरों ने पूछा, “सफ़र कैसा रहा?” 9 जासूसों ने जवाब में कहा, “आएँ, हम जंग के लिए निकलें! हमें एक बेहतरीन इलाका मिल गया है। आप क्यों झिजक रहे हैं? जल्दी करें, हम निकलें और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लें! 10 वहाँ के लोग बेफ़िकर हैं और हमले की तवक्क़ो ही नहीं करते। और ज़मीन वसी और जरखेज़ है, उसमें किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। अल्लाह आपको वह मुल्क देने का इरादा रखता है।”

दान के मर्द मीकाह का बुत इमाम समेत छीन लेते हैं

11 दान के क़बीले के 600 मुसल्लह आदमी सुरआ और इस्ताल से रवाना हुए। 12 रास्ते में उन्होंने अपनी लशकरगाह यहदाह के शहर क़िरियत-यारीम के करीब लगाई। इसलिए यह जगह आज तक महने-दान यानी दान की ख़ैमागाह कहलाती है। 13 वहाँ से वह इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में दाखिल हुए और चलते चलते मीकाह के घर पहुँच गए।

14 जिन पाँच मर्दों ने लैस की तफ़तीश की थी उन्होंने अपने साथियों से कहा, “क्या आपको मालूम है कि इन घरों में एक अफ़ोद, एक तराशा और ढाला हुआ बुत और दीगर कई बुत हैं? अब सोच लें कि क्या किया जाए।”

15 पाँचों ने मीकाह के घर में दाखिल होकर जवान लावी को सलाम किया 16 जबकि बाकी 600 मुसल्लह मर्द गेट पर खड़े रहे। 17 जब लावी बाहर खड़े मर्दों के पास गया तो इन पाँचों ने अंदर घुसकर तराशा और ढाला हुआ बुत, अफ़ोद और बाक़ी बुत छीन लिए। 18 यह देखकर लावी चीखने लगा, “क्या कर रहे हो!”

19 उन्होंने कहा, “चुप! कोई बात न करो बल्कि हमारे साथ जाकर हमारे बाप और इमाम बने। हमारे साथ जाओगे तो पूरे क़बीले के इमाम बनोगे। क्या यह एक ही ख़ानदान की ख़िदमत करने से कहीं बेहतर नहीं होगा?” 20 यह सुनकर इमाम खुश हुआ। वह अफ़ोद, तराशा हुआ बुत और बाक़ी बुतों को लेकर मुसाफ़िरों में शरीक हो गया। 21 फिर दान के मर्द रवाना हुए। उनके बाल-बच्चे, मवेशी और क़ीमती मालो-मता उनके आगे आगे था।

22 जब मीकाह को बात का पता चला तो वह अपने पड़ोसियों को जमा करके उनके पीछे दौड़ा। इतने में दान के लोग घर से दूर निकल चुके थे। 23 जब वह सामने नज़र आए तो मीकाह और उसके साथियों ने चीखते-चिल्लाते उन्हें स्कने

को कहा। दान के मर्दों ने पीछे देखकर मीकाह से कहा, “क्या बात है? अपने इन लोगों को बुलाकर क्यों ले आए हो?” 24 मीकाह ने जवाब दिया, “तुम लोगों ने मेरे बुतों को छीन लिया गो मैंने उन्हें खुद बनवाया है। मेरे इमाम को भी साथ ले गए हो। मेरे पास कुछ नहीं रहा तो अब तुम पूछते हो कि क्या बात है?”

25 दान के अफ़राद बोले, “खामोश! खबरदार, हमारे कुछ लोग तेज़मिज़ाज हैं। ऐसा न हो कि वह गुस्से में आकर तुमको तुम्हारे खानदान समेत मार डालें।” 26 यह कहकर उन्होंने अपना सफ़र जारी रखा। मीकाह ने जान लिया कि मैं अपने थोड़े आदमियों के साथ उनका मुकाबला नहीं कर सकूँगा, इसलिए वह मुडकर अपने घर वापस चला गया। 27 उसके बुत दान के कब्ज़े में रहे, और इमाम भी उनमें टिक गया।

### लैस पर कब्ज़ा और दान की बुतपरस्ती

फिर वह लैस के इलाके में दाखिल हुए जिसके बाशिंदे पुरसुकून और बेफ़िकर जिंदगी गुज़ार रहे थे। दान के फ़ौजी उन पर टूट पड़े और सबको तलवार से क़त्ल करके शहर को भस्म कर दिया। 28 किसी ने भी उनकी मदद न की, क्योंकि सैदा बहुत दूर था, और करीब कोई इतहादी नहीं था जो उनका साथ देता। यह शहर बैत-रहोब की वादी में था। दान के अफ़राद शहर को अज़ सरे-नौ तामीर करके उसमें आबाद हुए। 29 और उन्होंने उसका नाम अपने क़बीले के बानी के नाम पर दान रखा (दान इसराईल का बेटा था)।

30 वहाँ उन्होंने तराशा हुआ बुत रखकर पूजा के इंतज़ाम पर यूनतन मुकर्रर किया जो मूसा के बेटे जैरसोम की औलाद में से था। जब यूनतन फ़ौत हुआ तो उस की औलाद क्रौम की जिलावतनी तक दान के क़बीले में यही खिदमत करती रही।

31 मीकाह का बनवाया हुआ बुत तब तक दान में रहा जब तक अल्लाह का घर सैला में था।

## 19

### एक लावी की अपनी दाशता के साथ सुलह

1 उस ज़माने में जब इसराईल का कोई बादशाह नहीं था एक लावी ने अपने घर में दाशता रखी जो यहूदाह के शहर बैत-लहम की रहनेवाली थी। आदमी इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के किसी दूर-दराज़ कोने में आबाद था। 2 लेकिन एक दिन औरत मर्द से नाराज़ हुई और मैके वापस चली गई। चार माह के बाद 3 लावी दो गधे और

अपने नौकर को लेकर बैत-लहम के लिए रवाना हुआ ताकि दाशता का गुस्सा ठंडा करके उसे वापस आने पर आमदा करे।

जब उस की मुलाकात दाशता से हुई तो वह उसे अपने बाप के घर में ले गई। उसे देखकर सुसर इतना खुश हुआ <sup>4</sup> कि उसने उसे जाने न दिया। दामाद को तीन दिन वहाँ ठहरना पड़ा जिस दौरान सुसर ने उस की खूब मेहमान-नवाज़ी की। <sup>5</sup> चौथे दिन लावी सुबह-सवेरे उठकर अपनी दाशता के साथ रवाना होने की तैयारियाँ करने लगा। लेकिन सुसर उसे रोककर बोला, “पहले थोड़ा-बहुत खाकर ताज़ादम हो जाँ, फिर चले जाना।” <sup>6</sup> दोनों दुबारा खाने-पीने के लिए बैठ गए।

सुसर ने कहा, “बराहे-करम एक और रात यहाँ ठहरकर अपना दिल बहलाएँ।” <sup>7</sup> मेहमान जाने की तैयारियाँ करने तो लगा, लेकिन सुसर ने उसे एक और रात ठहरने पर मजबूर किया। चुनाँचे वह हार मानकर स्क्र गया।

<sup>8</sup> पाँचवें दिन आदमी सुबह-सवेरे उठा और जाने के लिए तैयार हुआ। सुसर ने जोर दिया, “पहले कुछ खाना खाकर ताज़ादम हो जाँ। आप दोपहर के वक़्त भी जा सकते हैं।” चुनाँचे दोनों खाने के लिए बैठ गए।

<sup>9</sup> दोपहर के वक़्त लावी अपनी बीवी और नौकर के साथ जाने के लिए उठा। सुसर एतराज़ करने लगा, “अब देखें, दिन ढलनेवाला है। रात ठहरकर अपना दिल बहलाएँ। बेहतर है कि आप कल सुबह-सवेरे ही उठकर घर के लिए रवाना हो जाँ।” <sup>10-11</sup> लेकिन अब लावी किसी भी सूत में एक और रात ठहरना नहीं चाहता था। वह अपने गधों पर ज़ीन कसकर अपनी बीवी और नौकर के साथ रवाना हुआ।

चलते चलते दिन ढलने लगा। वह यबूस यानी यरूशलम के करीब पहुँच गए थे। शहर को देखकर नौकर ने मालिक से कहा, “आएँ, हम यबूसियों के इस शहर में जाकर वहाँ रात गुज़ारें।” <sup>12</sup> लेकिन लावी ने एतराज़ किया, “नहीं, यह अजनबियों का शहर है। हमें ऐसी जगह रात नहीं गुज़ारना चाहिए जो इसराईली नहीं है। बेहतर है कि हम आगे जाकर जिबिया की तरफ़ बढ़ें।” <sup>13</sup> अगर हम जल्दी करें तो हो सकता है कि जिबिया या उससे आगे रामा तक पहुँच सकें। वहाँ आराम से रात गुज़ार सकेंगे।”

<sup>14</sup> चुनाँचे वह आगे निकले। जब सूरज गुरूब होने लगा तो वह बिनयमीन के कबीले के शहर जिबिया के करीब पहुँच गए <sup>15</sup> और रास्ते से हटकर शहर में

दाखिल हुए। लेकिन कोई उनकी मेहमान-नवाज़ी नहीं करना चाहता था, इसलिए वह शहर के चौक में स्क गए।

16 फिर अंधेरे में एक बूढ़ा आदमी वहाँ से गुज़रा। असल में वह इफ़राईम के पहाड़ी इलाके का रहनेवाला था और ज़िबिया में अजनबी था, क्योंकि बाकी बाशिंदे बिनयमीनी थे। अब वह खेत में अपने काम से फ़ारिग होकर शहर में वापस आया था। 17 मुसाफ़िरों को चौक में देखकर उसने पूछा, “आप कहाँ से आए और कहाँ जा रहे हैं?” 18 लावी ने जवाब दिया, “हम यहूदाह के बैत-लहम से आए हैं और इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के एक दूर-दराज़ कोने तक सफ़र कर रहे हैं। वहाँ मेरा घर है और वहीं से मैं रवाना होकर बैत-लहम चला गया था। इस वक़्त मैं रब के घर जा रहा हूँ। लेकिन यहाँ ज़िबिया में कोई नहीं जो हमारी मेहमान-नवाज़ी करने के लिए तैयार हो, 19 हालाँकि हमारे पास खाने की तमाम चीज़ें मौजूद हैं। गधों के लिए भूसा और चारा है, और हमारे लिए भी काफ़ी रोटी और मै है। हमें किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।”

20 बूढ़े ने कहा, “फिर मैं आपको अपने घर में खुशआमदीद कहता हूँ। अगर आपको कोई चीज़ दरकार हो तो मैं उसे मुहैया करूँगा। हर सूरत में चौक में रात मत गुज़ारना।” 21 वह मुसाफ़िरों को अपने घर ले गया और गधों को चारा खिलाया। मेहमानों ने अपने पाँव धोकर खाना खाया और मै पी।

### ज़िबिया के लोगों का जुर्म

22 वह यों खाने की रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़ हो रहे थे कि ज़िबिया के कुछ शरीर मर्द घर को घेरकर दरवाज़े को जोर से खटखटाने लगे। वह चिल्लाए, “उस आदमी को बाहर ला जो तेरे घर में ठहरा हुआ है ताकि हम उससे ज़्यादाती करें!” 23 बूढ़ा आदमी बाहर गया ताकि उन्हें समझाए, “नहीं, भाइयो, ऐसा शैतानी अमल मत करना। यह अजनबी मेरा मेहमान है। ऐसी शर्मनाक हरकत मत करना! 24 इससे पहले मैं अपनी कुँवारी बेटी और मेहमान की दाशता को बाहर ले आता हूँ। उन्हीं से ज़्यादाती करें। जो जी चाहे उनके साथ करें, लेकिन आदमी के साथ ऐसी शर्मनाक हरकत न करें।”

25 लेकिन बाहर के मर्दों ने उस की न सुनी। तब लावी अपनी दाशता को पकड़कर बाहर ले गया और उसके पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। शहर के आदमी पूरी रात उस की बेहुरमती करते रहे। जब पौ फटने लगी तो उन्होंने उसे फ़ारिग कर दिया। 26 सूरज के तुलू होने से पहले औरत उस घर के पास वापस आई जिसमें

शौहर ठहरा हुआ था। दरवाजे तक तो वह पहुँच गई लेकिन फिर गिरकर वहीं की वहीं पड़ी रही।

जब दिन चढ़ गया 27 तो लावी जाग उठा और सफर करने की तैयारियाँ करने लगा। जब दरवाजा खोला तो क्या देखता है कि दाशता सामने जमीन पर पड़ी है और हाथ दहलीज़ पर रखे हैं। 28 वह बोला, “उठो, हम चलते हैं।” लेकिन दाशता ने जवाब न दिया। यह देखकर आदमी ने उसे गधे पर लाद लिया और अपने घर चला गया।

29 जब पहुँचा तो उसने छुरी लेकर औरत की लाश को 12 टुकड़ों में काट लिया, फिर उन्हें इसराईल की हर जगह भेज दिया। 30 जिसने भी यह देखा उसने घबराकर कहा, “ऐसा जुर्म हमारे दरमियान कभी नहीं हुआ। जब से हम मिसर से निकलकर आए हैं ऐसी हरकत देखने में नहीं आई। अब लाज़िम है कि हम गौर से सोचें और एक दूसरे से मशवरा करके अगले कदम के बारे में फ़ैसला करें।”

## 20

### जिबिया को सज़ा देने का फ़ैसला

1 तमाम इसराईली एक दिल होकर मिसफ़ाह में रब के हुज़ूर जमा हुए। शिमाल के दान से लेकर जुनूब के बैर-सबा तक सब आए। दरियाए-यरदन के पार जिलियाद से भी लोग आए। 2 इसराईली क़बीलों के सरदार भी आए। उन्होंने मिलकर एक बड़ी फ़ौज तैयार की, तलवारों से लैस 4,00,000 मर्द जमा हुए। 3 बिनयमीनियों को इस जमात के बारे में इत्तला मिली।

इसराईलियों ने पूछा, “हमें बताएँ कि यह हैबतनाक जुर्म किस तरह सरज़द हुआ?” 4 मक़तूला के शौहर ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, “मैं अपनी दाशता के साथ जिबिया में आ ठहरा जो बिनयमीनियों के इलाक़े में है। हम वहाँ रात गुज़ारना चाहते थे। 5 यह देखकर शहर के मर्दों ने मेरे मेज़बान के घर को घेर लिया ताकि मुझे क़त्ल करें। मैं तो बच गया, लेकिन मेरी दाशता से इतनी ज़्यादाती हुई कि वह मर गई। 6 यह देखकर मैंने उस की लाश को टुकड़े टुकड़े करके यह टुकड़े इसराईल की मीरास की हर जगह भेज दिए ताकि हर एक को मालूम हो जाए कि हमारे मुल्क में कितना धिनौना जुर्म सरज़द हुआ है। 7 इस पर आप सब यहाँ जमा हुए हैं। इसराईल के मर्दों, अब लाज़िम है कि आप एक दूसरे से मशवरा करके फ़ैसला करें कि क्या करना चाहिए।”

8 तमाम मर्द एक दिल होकर खड़े हुए। सबका फैसला था, “हममें से कोई भी अपने घर वापस नहीं जाएगा 9 जब तक जिबिया को मुनासिब सज़ा न दी जाए। लाज़िम है कि हम फ़ौरन शहर पर हमला करें और इसके लिए कुरा डालकर रब से हिदायत लें। 10 हम यह फैसला भी करें कि कौन कौन हमारी फ़ौज के लिए खाने-पीने का बंदोबस्त कराएगा। इस काम के लिए हममें से हर दसवाँ आदमी काफ़ी है। बाकी सब लोग सीधे जिबिया से लड़ने जाएँ ताकि उस शर्मनाक जुर्म का मुनासिब बदला लें जो इसराईल में हुआ है।”

11 यों तमाम इसराईली मुत्तहिद होकर जिबिया से लड़ने के लिए गए। 12 रास्ते में उन्होंने बिनयमीन के हर कुंबे को पैगाम भिजवाया, “आपके दरमियान घिनौना जुर्म हुआ है। 13 अब जिबिया के इन शरीर आदमियों को हमारे हवाले करें ताकि हम उन्हें सज़ाए-मौत देकर इसराईल में से बुराई मिटा दें।”

लेकिन बिनयमीनी इसके लिए तैयार न हुए। 14 वह पूरे कबायली इलाके से आकर जिबिया में जमा हुए ताकि इसराईलियों से लड़ें। 15 उसी दिन उन्होंने अपनी फ़ौज का बंदोबस्त किया। जिबिया के 700 तजरबाकार फ़ौजियों के अलावा तलवारों से लैस 26,000 अफ़राद थे। 16 इन फ़ौजियों में से 700 ऐसे मर्द भी थे जो अपने बाएँ हाथ से फ़लाखन चलाने की इतनी महारत रखते थे कि पत्थर बाल जैसे छोटे निशाने पर भी लग जाता था। 17 दूसरी तरफ़ इसराईल के 4,00,000 फ़ौजी खड़े हुए, और हर एक के पास तलवार थी।

18 पहले इसराईली बैतेल चले गए। वहाँ उन्होंने अल्लाह से दरियाफ़्त किया, “कौन-सा कबीला हमारे आगे आगे चले जब हम बिनयमीनियों पर हमला करें?” रब ने जवाब दिया, “यहदाह सबसे आगे चले।”

### बिनयमीन के खिलाफ़ जंग

19 अगले दिन इसराईली रवाना हुए और जिबिया के करीब पहुँचकर अपनी लशकरगाह लगाई। 20 फिर वह हमला के लिए निकले और तरतीब से लड़ने के लिए खड़े हो गए। 21 यह देखकर बिनयमीनी शहर से निकले और उन पर टूट पड़े। नतीजे में 22,000 इसराईली शहीद हो गए।

22-23 इसराईली बैतेल चले गए और शाम तक रब के हुज़ूर रोते रहे। उन्होंने रब से पूछा, “क्या हम दुबारा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला करो!” यह सुनकर इसराईलियों का हौसला बढ़ गया और वह अगले दिन वही खड़े हो गए जहाँ पहले दिन खड़े हुए थे। 24 लेकिन



जब वह शहर के करीब पहुँचे 25 तो बिनयमीनी पहले की तरह शहर से निकलकर उन पर टूट पड़े। उस दिन तलवार से लैस 18,000 इसराईली शहीद हो गए।

26 फिर इसराईल का पूरा लशकर बैतेल चला गया। वहाँ वह शाम तक रब के हज़ूर रोते और रोज़ा रखते रहे। उन्होंने रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ पेश करके 27 उससे दरियाफ्त किया कि हम क्या करें। (उस वक़्त अल्लाह के अहद का संदूक बैतेल में था 28 जहाँ फ़ीनहास बिन इलियज़र बिन हारून इमाम था।) इसराईलियों ने पूछा, “क्या हम एक और मरतबा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ या इससे बाज़ आएँ?” रब ने जवाब दिया, “उन पर हमला करो, क्योंकि कल ही मैं उन्हें तुम्हारे हवाले कर दूँगा।”

### बिनयमीन का सत्यानास

29 इस दफ़ा कुछ इसराईली जिबिया के इर्दगिर्द घात में बैठ गए। 30 बाकी अफ़राद पहले दो दिनों की-सी तरतीब के मुताबिक लड़ने के लिए खड़े हो गए। 31 बिनयमीनी दुबारा शहर से निकलकर उन पर टूट पड़े। जो रास्ते बैतेल और जिबिया की तरफ़ ले जाते हैं उन पर और खुले मैदान में उन्होंने तकरीबन 30 इसराईलियों को मार डाला। यों लड़ते लड़ते वह शहर से दूर होते गए। 32 वह पुकारे, “अब हम उन्हें पहली दो मरतबा की तरह शिकस्त देंगे!”

लेकिन इसराईलियों ने मनसूबा बाँध लिया था, “हम उनके आगे आगे भागते हुए उन्हें शहर से दूर रास्तों पर खींच लेंगे।” 33 यों वह भागने लगे और बिनयमीनी उनके पीछे पड़ गए। लेकिन बाल-तमर के करीब इसराईली स्ककर मुड़ गए और उनका सामना करने लगे। अब बाकी इसराईली जो जिबा के इर्दगिर्द और खुले मैदान में घात में बैठे थे अपनी छुपने की जगहों से निकल आए। 34 अचानक जिबिया के बिनयमीनियों को 10,000 बेहतरीन फ़ौजियों का सामना करना पड़ा, उन मर्दों का जो पूरे इसराईल से चुने गए थे। बिनयमीनी उनसे खूब लड़ने लगे, लेकिन उनकी आँखें अभी इस बात के लिए बंद थीं कि उनका अंजाम करीब आ गया है। 35 उस दिन इसराईलियों ने रब की मदद से फ़तह पाकर तलवार से लैस 25,100 बिनयमीनी फ़ौजियों को मौत के घाट उतार दिया। 36 तब बिनयमीनियों ने जान लिया कि दुश्मन हम पर ग़ालिब आ गए हैं। क्योंकि इसराईली फ़ौज ने अपने भाग जाने से उन्हें जिबिया से दूर खींच लिया था ताकि शहर के इर्दगिर्द घात में बैठे मर्दों को शहर पर हमला करने का मौका मुहैया करें। 37 तब यह

मर्द निकलकर शहर पर टूट पड़े और तलवार से तमाम बाशिनदों को मार डाला, 38-39 फिर मनसूबे के मुताबिक आग लगाकर धुँए का बड़ा बादल पैदा किया ताकि भागनेवाले इसराईलियों को इशारा मिल जाए कि वह मुडकर बिनयमीनियों का मुकाबला करें।

उस वक़्त तक बिनयमीनियों ने तक़रीबन 30 इसराईलियों को मार डाला था, और उनका ख़याल था कि हम उन्हें पहले की तरह शिकस्त दे रहे हैं। 40 अचानक उनके पीछे धुँए का बादल आसमान की तरफ़ उठने लगा। जब बिनयमीनियों ने मुडकर देखा कि शहर के कोने कोने से धुँआँ निकल रहा है 41 तो इसराईल के मर्द स्क गए और पलटकर उनका सामना करने लगे।

बिनयमीनी सरख़्त घबरा गए, क्योंकि उन्होंने जान लिया कि हम तबाह हो गए हैं। 42-43 तब उन्होंने मशरिक के रेगिस्तान की तरफ़ फ़रार होने की कोशिश की। लेकिन अब वह मर्द भी उनका ताक़्कुब करने लगे जिन्होंने घात में बैठकर जिबिया पर हमला किया था। यों इसराईलियों ने मफ़्सूरों को घेरकर मार डाला। 44 उस वक़्त बिनयमीन के 18,000 तजरबाकार फ़ौजी हलाक हुए। 45 जो बच गए वह रेगिस्तान की चटान रिम्मोन की तरफ़ भाग निकले। लेकिन इसराईलियों ने रास्ते में उनके 5,000 अफ़राद को मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद उन्होंने जिदओम तक उनका ताक़्कुब किया। मज़ीद 2,000 बिनयमीनी हलाक हुए। 46 इस तरह बिनयमीन के कुल 25,000 तलवार से लैस और तजरबाकार फ़ौजी मारे गए।

47 सिर्फ़ 600 मर्द बचकर रिम्मोन की चटान तक पहुँच गए। वहाँ वह चार महीने तक टिके रहे। 48 तब इसराईली ताक़्कुब करने से बाज़ आकर बिनयमीन के क़बायली इलाके में वापस आए। वहाँ उन्होंने जगह बजगह जाकर सब कुछ मौत के घाट उतार दिया। जो भी उन्हें मिला वह तलवार की ज़द में आ गया, ख़ाह इनसान था या हैवान। साथ साथ उन्होंने तमाम शहरों को आग लगा दी।

## 21

बिनयमीनियों को औरतें मिलती हैं

1 जब इसराईली मिसफ़ाह में जमा हुए थे तो सबने कसम खाकर कहा था, “हम कभी भी अपनी बेटियों का किसी बिनयमीनी मर्द के साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे।”

2 अब वह बैतल चले गए और शाम तक अल्लाह के हुज़ूर बैठे रहे। रो रोकर

उन्होंने दुआ की, 3 “ऐ रब, इसराईल के खुदा, हमारी क्रौम का एक पूरा कबीला मिट गया है! यह मुसीबत इसराईल पर क्यों आई?”

4 अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठे और कुरबानगाह बनाकर उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढाईं। 5 फिर वह एक दूसरे से पूछने लगे, “जब हम मिसफाह में रब के हुज़ूर जमा हुए तो हमारी क्रौम में से कौन कौन इजतिमा में शरीक न हुआ?” क्योंकि उस वक़्त उन्होंने क्रसम खाकर एलान किया था, “जिसने यहाँ रब के हुज़ूर आने से इनकार किया उसे ज़रूर सज़ाए-मौत दी जाएगी।” 6 अब इसराईलियों को बिनयमीनियों पर अफ़सोस हुआ। उन्होंने कहा, “एक पूरा कबीला मिट गया है। 7 अब हम उन थोड़े बचे-खुचे आदमियों को बीवियाँ किस तरह मुहैया कर सकते हैं? हमने तो रब के हुज़ूर क्रसम खाई है कि अपनी बेटियों का उनके साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे। 8 लेकिन हो सकता है कोई खानदान मिसफाह के इजतिमा में न आया हो। आओ, हम पता करें।” मालूम हुआ कि यबीस-जिलियाद के बाशिंदे नहीं आए थे। 9 यह बात फ़ौजियों को गिनने से पता चली, क्योंकि गिनते वक़्त यबीस-जिलियाद का कोई भी शरख़्स फ़ौज में नहीं था।

10 तब उन्होंने 12,000 फ़ौजियों को चुनकर उन्हें हुक्म दिया, “यबीस-जिलियाद पर हमला करके तमाम बाशिंदों को बाल-बच्चों समेत मार डालो। 11 सिर्फ़ कुँवारियों को ज़िंदा रहने दो।”

12 फ़ौजियों ने यबीस में 400 कुँवारियाँ पाईं। वह उन्हें सैला ले आए जहाँ इसराईलियों का लशकर ठहरा हुआ था। 13 वहाँ से उन्होंने अपने कासिदों को रिम्मोन की चटान के पास भेजकर बिनयमीनियों के साथ सुलह कर ली। 14 फिर बिनयमीन के 600 मर्द रेगिस्तान से वापस आए, और उनके साथ यबीस-जिलियाद की कुँवारियों की शादी हुई। लेकिन यह सबके लिए काफ़ी नहीं थी।

15 इसराईलियों को बिनयमीन पर अफ़सोस हुआ, क्योंकि रब ने इसराईल के कबीलों में ख़ला डाल दिया था। 16 जमात के बुज़ुर्गों ने दुबारा पूछा, “हमें बिनयमीन के बाक़ी मर्दों के लिए कहाँ से बीवियाँ मिलेंगी? उनकी तमाम औरतें तो हलाक हो गई हैं। 17 लाज़िम है कि उन्हें उनका मौरूसी इलाक़ा वापस मिल जाए। ऐसा न हो कि वह बिलकुल मिट जाएं। 18 लेकिन हम अपनी बेटियों की उनके साथ शादी नहीं करा सकते, क्योंकि हमने क्रसम खाकर एलान किया है,

‘जो अपनी बेटी का रिश्ता बिनयमीन के किसी मर्द से बाँधेगा उस पर अल्लाह की लानत हो’।”

19 यों सोचते सोचते उन्हें आखिरकार यह तरकीब सूझी, “कुछ देर के बाद यहाँ सैला में रब की सालाना ईद मनाई जाएगी। सैला बैतेल के शिमाल में, लबूना के जुनूब में और उस रास्ते के मशरिक में है जो बैतेल से सिकम तक ले जाता है। 20 अब बिनयमीनी मर्दों के लिए हमारा मशवरा है कि ईद के दिनों में अंगूर के बागों में छुपकर घात में बैठ जाएँ। 21 जब लडकियाँ लोकनाच के लिए सैला से निकलेंगी तो फिर बागों से निकलकर उन पर झपट पड़ना। हर आदमी एक लडकी को पकड़कर उसे अपने घर ले जाए। 22 जब उनके बाप और भाई हमारे पास आकर आपकी शिकायत करेंगे तो हम उनसे कहेंगे, ‘बिनयमीनियों पर तरस खाएँ, क्योंकि जब हमने यबीस पर फ़तह पाई तो हम उनके लिए काफ़ी औरतें हासिल न कर सके। आप बेकुसूर हैं, क्योंकि आपने उन्हें अपनी बेटियों को इरादतन तो नहीं दिया’।” 23 बिनयमीनियों ने बुजुर्गों की इस हिदायत पर अमल किया। ईद के दिनों में जब लडकियाँ नाच रही थीं तो बिनयमीनियों ने उतनी पकड़ लीं कि उनकी कमी पूरी हो गई। फिर वह उन्हें अपने क़बायली इलाके में ले गए और शहरों को दुबारा तामीर करके उनमें बसने लगे। 24 बाक़ी इसराईली भी वहाँ से चले गए। हर एक अपने क़बायली इलाके में वापस चला गया। 25 उस ज़माने में इसराईल में कोई बादशाह नहीं था। हर एक वही कुछ करता जो उसे मुनासिब लगता था।

किताबे-मुकदस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo  
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: اردو (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2023-11-29

---

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 22 Feb 2024 from source files dated 30 Nov 2023

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299